ॐ नमः शिवाय ॐ

चतुर्थ अध्याय ;कुमार खण्डद्ध

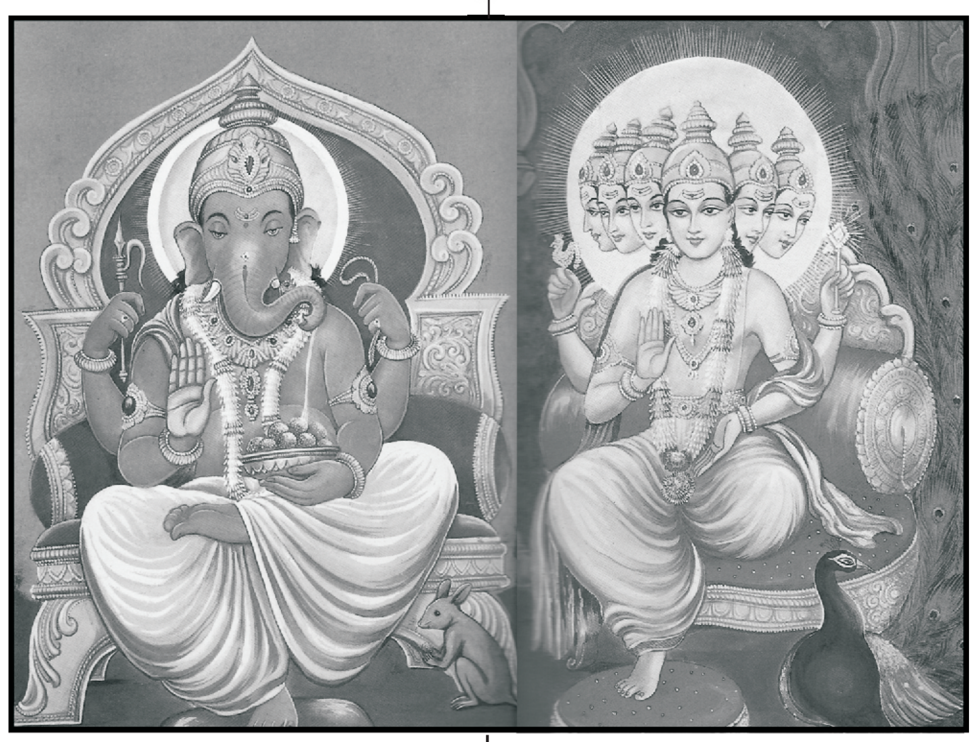

ध्यान

तवैश्वर्यं यत्त ागदुदय रक्षा प्रलयड्डत्,
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नाासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड़धियः।।
किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं,
कियाधारो धाता सृजाति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वयै त्वय्यनवसरदुःस्थो हताधियः,
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।।
अजन्यानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि
जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनाहत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवन जनने कः परिकरो,
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।

हे विश्व मण्डल के आदि कारण,
उत्पत्ति पालन संहार कर्त्ता,
होता तुम्हीं में लय यह जगत सब,
उद्धार कर दो हे गौरीशंकर।।
हो विष्णु ब्रह्मादि आधार जग के,
तुम भक्त पालक भव पाप हर्त्ता
हे काल के काल अनादि ईश्वर,
उद्धार कर दो हे गौरीशंकर।।
हे विश्व कल्पादि के आदि स्वामी,
ब्रह्माण्ड व्यापी आलोक कर्त्ता।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण,
उद्धार कर दो हे गौरीशंकर।।

ँ श्री गणेशाय नमः ँ
नमः शिवाय नमः शिवायै
शिव शक्ति कथा
चतुर्थ अध्याय ;कुमार खण्डद्ध
ऊँ नमः शिवाय
मंगल वन्दना
नारायण विद्महे, विश्व देवाय धीमहि
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि
तन्नो लक्ष्मीं प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योनः प्रचोदयात्।
यत्र देहयतनेऽपिदेहिनां मुक्तिरेव भवतीति निश्चितम्।
पूर्वपुण्यनिचयेव लभ्यते विश्वनाथ नगरी गरीयसी।।1।।
स्वर्गतः सुखकारी दिवौकसां शैलराजतनयातिबल्लभा।
ढुण्ढि भैरवविदारिता शुभा विश्वनाथ नगरी गरीयसी।।2।।
राजतेऽत्रः मणिकर्णिकामला सा सदाशिव सुखप्रदायिनी।
या शिवेन रचिता निजायुधैर्विश्वनाथ नगरी गरीयसी।।3।।
सर्वदा अमर वृन्दवन्दिता दिग्गजेन्द्र मुखवारिता शिवा।
काल भैरव कृतैकशाानाः विश्वनाथ नगरी गरीयसी।।4।।
यत्र मुक्तिरखिलैस्तु जन्तुभिर्लभ्यते मरणमात्रतः शुभा।
साऽखिलाभरगणैरभीप्सिता विश्वनाथ नगरी गरीयसी।।5।।
उरंग तुरंग खगं मृगं वा करिणं केसरिणं खरं नरं वा।
सकृदाप्लुत एव देव नद्याः लहरी किं न हरं चरीकरीति।।6।।
वन्दे वन्दनतुष्टमानसमतिप्रेम प्रियं प्रेमदं,
पूर्णं पूर्णकरं प्रपूर्णानिखिलैश्वर्यैकवासं शिवम्।
सत्यं सत्यमयं त्रिसत्यविभवं सत्यप्रियं सत्यदं,
विष्णु ब्रह्मनुतं स्वकीयकृपयोपात्ताकृतिं शकरम्।।7।।
महादेव महात्मानं महाध्यानपरायणम्।
महापाप हरं देवं मकाराय नमो नमः।।8।।

कारण कारण विश्वपति, उमानाथ गृह रूप।
तिन वन्दउं मैं जोरि कर, भव कल्याण स्वरूप।।1।।
आदि अन्त आधार जग, लीला बूझि न जात।
लोक हितारथ कारने, गहिय गृही औकात।।2।।
काशी घर तट गंग के, जहं अत्रीश्वर धाम।
गृह आश्रम विरचिय तहां, करहिं देव प्रणाम।।3।।
पद वन्दत सुर आइ नित, करत सुपावन भक्ति।
गृही तपोवन सिद्ध करि, विश्वनाथ संग शक्ति।।4।।
होन लाग काशी नगर, डमरू नाद त्रिशूल।
जयति शिवा शिव गूंज बनु, भागन लगु भवशूल।।5।।
धरनि धर्म दिश काशि नभ, पाइअ परमानन्द।
अवलोकिय शिव पार्वती, तहं दुराइ भव फन्द।।6।।
सुजन गृही जेहि पुर बसै, ताहि नगर सुख जाग।
लगे बसन्ह सुर आइ तट, प्रगटाइअ अनुराग।।7।।

वेद विधान ब्याह शिव रांचिय। काशी बसन्ह मनोवृत्ति खांचिय।।
शास्त्राचार लोक व्यवहारा। लागे निभावन लै संग दारा।।
गिरिजा सहित गृही रस रासी। बनु काशी बासी सुख रासी।।
जिन सुनि जानिय करिय पयाना। देखन्ह बेश गृही भगवाना।।
लगे बसन्ह सुर हर गृह नेरे। छबि लखि मुदित लगावहि फेरे।।
देव वृन्द लगु काशी छावन। देव नगर लगु सून दिखावन।।
लोग लुगाई जहं जे जाना। दिखब नयन भरि सोचि पयाना।।
आइ दरस करि मांगहि वोही। दुर्लभ देह तपाये जोही।।
इहि विधि भीड़ लागि शिव द्वारे। काशी बनु सम स्वर्ग नुहारे।।
रह इक तो शिव औढरदानी। दूजे धर्म गृही मन सानी।।
पुर काशी साधिय शिव एही। बनेव अतिथि सेवा पथ नेही।।
शिव सेवा पसरी चहुं बाता। भल अनभल जोरिय सब नाता।।
जब ते गिरिजापति गृह छाई। काशी दान पाउ प्रभुताई।।
मुदित गंग कीन्ही अस धरनी। काशी तरहिं भले कोउ करनी।।
धरा धाम काशी अद्भूता। न सम आन बसे अवधूता।।
होइ महा धुनि प्रात सुनावन। बम बम हर हर गंग नहावन।।
कलिक कलूष कुकाल कुठारा। तहं भागइ जेस रहा निकारा।।
महा काल डारिय जहं डेरा। करि गण आयसु ताप खदेरा।।
जम कै दूत फिरैं बगिलाई। जेहि मुख सुनै जपत गिरिजाई।।
बसु काशी कैलास प्रभूता। लै त्रिशूल फिरहिं शिव दूता।।

बसहिं उमापति नेर सनेही। सब मन अन्तर उपजत एही।।
सोई सृष्टि धरा रखवारू। कारण आदि रूप संहारू।।
उत जग स्वामिनि भव महतारी। प्रिय सन बोली वचन संभारी।।
नाथ नगर जन लोग लुगाई। आवहिं इहां दरसि फिरि जाई।।
बहु आमंत्रण मिला बुलावा। देखन्ह नगर मनहुं ललचावा।।
सकहिं न जे जन निज पुर आई। चलि तिन देखिअ करिय भलाई।।
जानन्ह नगर हाल युग धर्मा। तद अनुसार सुसाधिय कर्मा।।
कौन ताप दुख अवगुण भारी। नाथ सकत तुम नाहि निवारी।।
गनि भल प्रिया वचन स्वीकारा। बोले शंभु सुनाइअ दारा।।

अहंकार मन जाहि बसु, नहि सुकर्म सत्प्रेम।
होत दूरि नहि ताहि दुख, रहा विधाता नेम।।8।।

मनहुं महेश लाग भल नीका। चाह पुराइब गिरिजा हीका।।
काशी बसिय समेत भवानी। गृही धर्म साधिय हित मानी।।
करन्ह देव हित मनुज सुखारी। रांचिय जीवन सम नर नारी।।
लहइ उथान जथा सुर कूला। सो विधि शंभु गनहिं अनकूला।।
काशी बासी गृह सुख राशी। रह भल साधत अन्तर बासी।।
लेन गृही फल शंकर गिरिजा। उतइ सुरन्ह नाना व्रत सिरिजा।।
उपजन शंभु तनय बलवाना। सुरन्ह मनौती ठानिय नाना।।
कारन स्वारथ तारक मारन। ताते रह मिलु पीर अपारन।।
जाइ न तारक प्रभुता बरनी। व्यापि चहूं दिशि ता कलि करनी।।
जब ते तारक बल जग जागिअ। सुर दिग्पाल लुकाइअ भागिअ।।
खल ललकारि सुनावइ गारी। ले दल सिंह नाद करि भारी।।
देव कहां गै खोजत खोरी। रन मन मत्त फिरहिं खल जोरी।।
अभय फिरहिं सब फिरहिं बेराई। विश्व अधिकार समान कलाई।।
किन्नर सिद्ध मनुज सुर जेई। बरबस राह रोध करि तेई।।
सुख सम्पति बल सेन सहाई। तारक आयसु टारि न जाई।।
नित नूतन फिरि रचइ अगूना। मानि जइस जेस जग ब्रह्म सूना।।

घोर पाप तारक करत, बरनि न जाइ अनीति।
रहा तासु अघ नाप नहिं, हिंसा ते बड़ प्रीति।।9।।
भुजबल ते सुर डरि फिरै, चलै न कोऊ नीति।
फिरहिं लोक सुर शोक लै, सकै न तारक जीति।।10।।

रन सन्मुख तेहि परै न कोई। सुर पुर लोक मनुज चहुं रोई।।
करहिं उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप दिखाइअ माया।।
बाढ़इ पाप धर्म बनु हानी। गति सोई रांचिय मनमानी।।

होहिं दुखी गो सुर द्विज जैसे। करनी करम करावइ वैसे।।
शुभ सतकर्म करइ निरमूला। रावन सम तारक देइ शूला।।
धर्माचारन यज्ञ विधाना। परै न वेद मंत्र कोउ काना।।
बाढ़े खल कुल चोर जुआरी। अगुनी अघी हरन पर नारी।।
रह तारक संग बल अद्भूता। धराकुलानि अधम अनकूता।।
नभ फिरि हुंकरइ गर्जन घोरे। मुनि मानव सुर बधइ बरोरे।।
चहूं पसारि दिहिस दनुजाई। ता दुख अन्त न परइ दिखाई।।
सुर अकुलाइ गये विधि भवना। कहि निज व्यथा भरे जल नयना।।
नमनत शीश नाइ गति वरनी। नाथ सहउं कबलौं खल करनी।।
दानव तारक खल उतपाता। लोक विदित का तुम नहि ज्ञाता।।

सुरन्ह विनय ब्रह्म सुनिय, बोले सोचि विचार।
हेतु इहिय शिव व्याह भे, सो गृह आश्रम धार।।11।।
बिना शंभु सुत को बधइ, तारक कुल परिवार।
नाही दूज उपाइ कछु, मिलै मोहि संसार।।12।।
सुरन्ह संग लै विधि चले, आये काशी धाम।
विपदा हर स्तुति करिय, करि युग पद प्रनाम।।13।।

नमोऽस्त्वनन्तरूपाय नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते।
अविज्ञात स्वरूपाय कैवल्यायामृताय च।।1।।
नान्तं देवा विजनन्ति यस्य तस्मै नमो नमः।
यं न वाचः प्रशंसन्ति नमस्तस्यै चिदात्मने।।2।।
नमः श्री विश्वनाथाय देववन्द्य ते।
काशीशेशावतारो मे देवदेव ह्युपादिश।।3।।
मायाधीशं महात्मानं सर्वकारण कारणम्।
वन्दे तं माधवं देवं यः काशीं चाधितिष्ठति।।4।।

गंगा तरंग रमणीय जटाकलापं,
गौरी निरन्तर विभूत वामभागम्।
नारायणप्रियमनंगमदाप हारं,
वाराणसी पुर पतिं भज विश्वनाथम्।।5।।
पचाननं दुरितमत्तमतंगजानां,
नागान्तकं दनुजपंगवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोक जराटवीनां,
वाराणसी पुर पतिं भज विश्वनाथम्।।5।।

रागादि दोष रहितं स्वजनानुरागं,
वैराग्य शान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुीज्ञगं गरलाभिरामं,
वाराणसी पुर पतिं भज विश्वनाथम्।।7।।
हे वामदेव शिवशंकर दीनबन्धो,
काशीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
हे विश्वनाथ भवबीज जनार्तिहारिन्,
संसारदुखगहनाज्जगदीश रक्ष।।8।।
हे भक्तवत्सल सदाशिव हे महेश,
हे विश्वतात जगदाश्रम हे पुरारे।
गौरीपते मम पते मम प्राणनाथ,
संसारदुखगहनाज्जगदीश रक्ष।।9।।
हे दुखभंजक विभो गिरिजेशशूलिन,
हे वेदशास्त्रविनिवेद्य जनैकबन्धो।
हे व्योमकेश भुवनेश जगद्विशिष्ट,
संसारदुखगहनाज्जगदीश रक्ष।।10।।

तुंहि पितु मातु सुभ्राता संगी। दाता जीवन अनतर अंगी।।
तुंही वायु यम पावक पानी। रवि शशि गरह लाभ अरु हानी।।
रूप विष्णु अज योगी कामी। नमो नमामी नमो नमामी।।
सरब देव त्रिभुवन महादेवा। काशी धाम करत सुर सेवा।।
तुहीं आदि नर नारि स्वरूपा। विश्व जनम मारण अनुरूपा।।
तुहीं वेद विधि शास्त्र पुराना। विश्व अनन्त रूप भगवाना।।
तुहीं सृष्टि कर्त्ता जग पालक। दयासिन्धु भव विपदा घालक।।
आदि अनन्त पूरक सब खामी। नमो नमः सरवेश्वर स्वामी।।
तुहीं धर्म धन रक्षा कारी। पाप विनाशक भव हितकारी।।
पूजि देव नर चरण तुम्हारे। उबरे भयउ सकल दुख पारे।।
नाशेउ देव व्यथा तुम अब तक। धरि गृह रूप हतहु दुख कबतक।।
वृत्रासुर आदिक खल नाशा। नाशन तारक कौन हिरासा।।
पाउ भील तुम ते शिव लोका। जीतेउ मेघनाथ सुर लोका।।
को करि सकै कहां तक गणना। करि गौरीपति कृपा कितना।।
तुम महिमा प्रभु प्रबल प्रचण्डा। होहि जिते सुर नर दुख खण्डा।।
गृह महिमाधर हर त्रिपुरारी। वेगि सुनहु प्रभु देव गोहारी।।

सहित सुरन्ह ब्रह्मा विनय युगल रूप अखिलेश।
सुनत मनन चिन्तन करिय, केहि विधि कटै क्लेश।।14।।
भले गृही पर देव दुख, नाशन उबला खून।
एवमस्तु कह जाउ घर, करब असुर वृत्ति सून।।15।।

सुनि सुर हरखे घर फिरेउ, करन्ह गठन सुर सेन।
इत संकल्पित शिव बनेउ, तनय आपु सम देन।।16।।
जौन बधइ तारक सहित, वृत्ति आसुरी राज।
देव वृत्ति वर्धन करइ, सुख लह राष्ट्र समाज।।17।।

गृह पथ धारी शिव त्रिपुरारी। सहित उमा मन आपु विचारी।।
व्याह उद्देश्य गृही सफलाई। जौ सन्तति सुर हित दइ पाई।।
होहि पूर जीवन गृह धर्मा। साधि चले सन्तति सुर कर्मा।।
मात पिता जथ तथ सन्ताना। आगम निगम पुराण बखाना।।
बीज नुसारे उपजहिं तरुवर। लोक कथन कर जहं जंगल वर।।
इहि ते प्रिया सुनहु चितलाई। शास्त्र विधान सकुल सुखदाई।।
शंकर नीति शिवा मन भावा। मुस्कानी स्वीकार जनावा।।
आनन्द वन मरजाद संवारन। कीन शिवा संग शिव व्रत धारन।।
जप तप योग अनेकन ढंगा। साधन लागे दोउ इक संगा।।
जेहि विधि बनु सन्तति सुर सेवी। साधइ भाव सोई महा देवी।।
सृष्टा रूप उमा महतारी। जौ विधि शास्त्र स्वंय तन वारी।।
माया महिमा जग पुरुषारथ। जप तप नेम धरम परमारथ।।
सकल मनोरथ पूरण करहीं। तलक विरोधी बनु अनुसरहीं।।
सहित शिवा शिव जोउ प्रयासा। भले गृही पर होइ न नाशा।।
साधहि कर्म धर्म दिन राती। हेतु सुसन्तति खल आघाती।।
चिन्तन चर्च चरित सो लावा। जेहि मा सुर हित सकल समावा।।
भांति पुरोहित पथ अपनाये। काशी बसि शिव सीख सिखाये।।

आपु धर्म गृह साध जेस, संतति हेतु विचार।
लोक हितारथ जानि सो भाखे सुर हितकार।।18।।

सुनहु प्रिया गृह जीवन पावन। सबल समर्थ सुयोग बढ़ावन।।
सब दुख हारी सब सुख कारी। आपु सहित वसुधा हितकारी।।
नारि पुरुष जिमि एक समाना। तनया तनय भांति तेहि जाना।।
होत तनय जथ आतम रूपा। तनया मांनु ताहि अनुरूपा।।
नारि बिना सुर सृष्टि दुखारी। करि न सकै अपनव रखवारी।।
जिमि नौ मास राखि तिय काया। डारइ जीवन चिन्तन छाया।।
संस्कार गृह वातावरना। जथा तथा सन्तति अवतरना।।
पुनि दस वर्ष समय दिन पाये। जेस गढ़ही तेस बनि सब जाये।।
नीति नयन स्नेह समेता। करि पोषण जे बाल निकेता।।
भांति जौन रचु होइ सो पाना। मात पिता शिशु हेतु खजाना।।
बाल गीलि माटी अनुरूपा। वातावरण कुम्हार स्वरूपा।।

इहि कारण गृह आश्रम, जौ आदर्श अपार।
पाइ ताहि परिवार जन, सकै साधि सदचार।।19।।
देखे आंख दुलार लै, साथ सुधार लगाइ।
गृह विद्यालय मांनु भल, जौ कुसंग न पाइ।।20।।
रुचइ जौन शिशु मन अधिक, जौन कला प्रवीन।
बूझि मात पितु देहिं सो, तौ जानउं भल कीन।।21।।

विविध कुचक्र कुरीति कुहासा। मूढ़ मान्यता अंध विश्वासा।।
नाना दुर्गुण दोष लोक के। व्यापहिं रूपे रोग शोक के।।
बचि सब से पालइ परिवारा। सुलभ बैन कह नीक विचारा।।
मां पितु जांनु बाल तन अंगा। जिमि भव तारिणि गोमति गंगा।।
ना गिरु शिशु नभ बुन्द समाना। जन्महि मात पिता लै बाना।।
चेतन चिन्तन सिंचन जैसे। संस्कार जेस सन्तति वैसे।।
देश काल स्थिति अनुसारा। चलहीं राष्ट्र धरम परिवारा।।
जेहि कुल परिष्कार मति दूभर। ता कुल मांनु धरा सम ऊसर।।
जहं शिशु पालन होइ अध्याना। ता घर उपजइ कुमति खजाना।।
शिशु जीवन जग का उपयुक्ता। का नाही करु तेस प्रयुक्ता।।
सम शिशु अक्षय निधि नहि आना। सका न जे करि शिशु निरमाना।।
गनु निज जीवन नरक पठावा। मरे बादि पशु योनि सिधावा।।
करन्ह बाल तन विधि निरमाना। गर्भ ते परिणय दिन तक माना।।
धूम पान मादक पय पाने। जौ पितु मातु आप तन साने।।
ता सन्तति प्रज्ञा न पाहीं। करहिं नसेवा जेस मन चाही।।
जथा द्रव्य मादक जग माझे। नाशहिं पूत पिता गुण साझे।।
मात पिता आहार बिहारा। जथ बनु तथ कह शास्त्र विचारा।।

जौ मानव चह देव हित, तौ आपन षट साध।
बिना देव हित न घटइ, धरनि धाम अपराध।।22।।
गहत गृही मोकहं मिलेउ, भार देव हित हेत।
पार्वती से प्रिय वचन, अस कह कृपानिकेत।।23।।

सुनहु प्रिया मानव मनुजाई। जासे मोहि परम प्रीताई।।
शकति साधना भगति भावना। ध्यान समर्पण विनय याचना।।
इत उभराउ मनुज प्रभुताई। षट साधिय बनु योगी नांई।।
हम काशी काशी हम रूपा। जह इत तहं गनु स्वर्ग स्वरूपा।।
जे इहि तीरथ करइ निवासा। पाप नाशि पुरवइ अभिलासा।।
हम तुम बनिय गृही जेहि कारन। सो अब सुलभ मिलै इहि ठारन।।
जपु गायत्री करु क्रतु कर्मा। षट साधिय राखिय गृह धर्मा।।

परम पुनीत नेर तट गंगा। सुरन्ह हितारथ बसु मन संगा।।
सकल योग जप नियम निबाहे। चाराचार जौन भल आहे।।
विधि विधान सन्तति तेस होई। चाह जइस संस्कार संजोई।।
इहि जीवन इहि धरनी देशे। करन सुरन्ह हित ह्रदय उद्देशे।।

सुरन्ह काज हित भावना, चार विचार उतारि।
गृह आश्रम साधन लगेउ, सहित उमा त्रिपुरारि।।24।।
पुनि काशी भ्रमण करन्ह, धरनि धाम बल लेन।
सहित उमा शंकर चहेउ, लोक लोग सुख देन।।25।।

सुर दुःख भय आंतक निपातन। सब विधि लोक असुरता घातन।।
जौन तौन शिव चिन्तन लाई। सहित प्रिया मन चाह बिताई।।
बार बार सुर पाउ पराजय। केहि कारण भव पाउ असुर जय।।
देन देव जय असुर बिदारन। भूतल भवन गृही तन तारन।।
इहि चिन्तन शिव ह्रदय समाने। सोच तथा करि पथ मन साने।।
इहि सम सरल उपाइ न आना। साधिय षट जनहीं सन्ताना।।
तौ सुर जय भव असुर पराजय। संशय नाहि प्रिया तनिका कय।।
धर्म गृहस्थ साधि षट जेई। हतइ असुरता सन्तति तेई।।
मानव देह षटज प्रभुताई। साधि उमा शिव भव प्रगटाई।।
विश्वनाथ वसुधा पितु माता। बनि गृहस्थ दरसाइअ नाता।।
हम का तुम का हम तुम हेतू। करत साधना गृही निकेतू।।
भव हित हेत समर्पण ऐसे। करु जे ता सम लोक न वैसे।।
जग जननी गिरिजा अवतारी। सोहत संग प्रीति स्वीकारी।।
काशी धाम भवन आनन्दा। सेवा हेतु ठाढ़ गण वृन्दा।।
जाको जौन मिली सेवकाई। ताहि निबाहत शीश नवाई।।
विचरण नगर चाह मन शंकर। बूझि तयारी करिय नन्दीश्वर।।

नन्दीश्वर लायेउ तहां, देव विमान सजाइ।
भूषित रथ पर चढ़ि चलेउ, उमा शंभु हरखाइ।।26।।

नन्दी देव देव रथ हांका। काशी बीच धरा पथ वाका।।
गण सेनानी आग पछारी। चलत मगन मारत किलकारी।।
जयति शिवा शिव स्तुति लाई। इन्द्रादिक सुर चंवर डुलाई।।
दर्शन करन्ह लोग मग ठाढ़े। चरन विलोकि परम सुख बाढ़े।।
चलु रथ विचरत सब घर द्वारे। पाइ दरस पुर बनत सुखारे।।
जौन दरस कीन्हें तप दुरलभ। आपु विधाता कीन्ह सो सूलभ।।
कहि न जाइ शिव शिवा बड़ाई। काशी महिमा आपु बढ़ाई।।
देन दरस शिव नगर पधारे। समाचार पुर लोग पसारे।।

जैगीषव्य भवन प्रभु आये। तहं ठहरे दिन राति बिताये।।
सेवक जानि महान मुनीशा। बड़ आदर कीन्ही जगदीशा।।
जानि मुनीश जगत रखवारू। पद पूजिय बहु विनय उचारू।।
सुनि आये आश्रम तट बासीं। सुनन्ह धर्म गृह मुख अविनाशी।।
जिन आवा तिन बड़ सुख पावा। काह न जेहि शिव नीति सुहावा।।
कह पुरवासिन जनम हमारे। सहज तरेउ पद युग्म निहारे।।
जेस प्रभु कीन्ह आइ हित मोरा। नहि अस सुखे दूज कोउ बोरा।।
पुनि आगे चलि भे सुखधामा। करि मुनि गुफा नमन प्रणामा।।
नगर दशा देखत दोउ नयने। सब हित चाह निकारत बयने।।
लगत नगर जन सम परिवारा। गृही भाव जब पुर पगु डारा।।
नगर निवास विलोकत चलहीं। काव कहां केस नयनन धरहीं।।
चलि मिलि नगर लोग अगुवानी। परिचय देत करत जय बानी।।

मुदित ध्यान धरि सुनि चलत, विश्व मात पितु दोउ।
भल भविष्य इन होइ केस, सो मत भाखत वोउ।।27।।

नीतिवान राजन अनुसारा। विश्व पिता गृह धर्म संभारा।।
भाषा भाव विचार सुबानी। रहेउ निकारि भ्रात सख खानी।।
शालीनता देखि पुर लोगा। जगिय भाग्य कह मिलेउ सुयोगा।।
विचरत नगर महेश्वर जबहीं। मुदित गाउ पुरजन करतलहीं।।
नगर लगत जेस स्वर्ग सुहावा। छबि देखन्ह करहीं सुर आवा।।
होत देव दल परम सुखारी। चलु जौ गृही शास्त्र अनुहारी।।
जेतिक धर्म धाम पुर मांही। शिव दरसिय नमनिय सब ठांही।।
तीरथ ठांव बचे नहि एकू। गयउ न हो जहं धर्म धरेकू।।
लेइ आशिष तीरथ अनुसारा। रखहिं चाह जेस जन संसारा।।
गो द्विज सुरन्ह करत हित बाता। फिरु काशी पुर जग सुखदाता।।
देत लेत परिचय सबही ते। चलत रीति अनुसार गृही ते।।
सब संग आपु आपु संग सब का। इहि मति नीति सुनाइ वचन का।।
ऋषि मुनि धरा धाम प्रभुताई। धन्य शिवा शिव जिन अपनाई।।
गृह आश्रम महिमा अनकूता। करिय प्रगट साधिय अवधूता।।
मिलि सब ते शिव भ्रात समाना। फिरेउ जहां ते करिय पयाना।।
दरसन दशा विलोकिय जेई। रवि ते करिय मनौती तेई।।
अस बाढ़ै शिव कुल परिवारा। जासु राज रहु युगन हजारा।।
रहहिं लोक त्रय जिते सुखारे। मनुज मनुजता फिरइ संभारे।।

अवलोकिय काशी नगर, फिरेउ तीर्थ बल पाइ।
आनन्द वन शोभित भयो, गृहपति बनि शिव आइ।।28।।

लोकाशीश तीर्थ परभाऊ। जप तप आपन ध्यान निभाऊ।।
गंग नहावन वचन विनीता। मानव धर्म मनुज प्रति प्रीता।।
लोक कर्म गृह धर्म नुसारे। शंभु तेज बनु अपरमपारे।।
जागिय षटज साधना शक्ती। लोक याचना सुरगण भक्ती।।
व्यापि गयउ गौरी मन माथे। सुर हित संस्कार जोउ साथे।।
मांग जथा रह देव विधाता। करि तेस प्रगट तनय सुर माता।।
कार्तिक छठी लगन शुभवारा। पाउ जनम स्कन्ध कुमारा।।
उमा धरम गृह शंकर संयम। षट कृतिका सेवा बालक बम।।
सुर सरि गोद शकति बल पाला। नाम इते बड़ गिरिजा लाला।।
षट मुख बाल जनम अवतारी। तथा साधना करि त्रिपुरारी।।
हिम कुल सुर मुनि जे सुनि पाये। छोड़ि आपु घर काशि सिधाये।।
उत्सव जन्म अपार अनन्दा। मापि न जाइ थिरे रवि चन्दा।।
विश्वामित्र देव ऋषि जेते। संस्कार करि गृही निकेते।।
अत्रि आदि अनसूया देवी। गाइ सुमंगल आतिथ सेवी।।
आइ देव दल बड़ हरखाहीं। परम मुदित आशिष प्रदाहीं।।
नारदादि मुनि वृन्द सनेही। स्तुति करहिं विलोकहिं देहीं।।

हाथ पैर मुख माथ लखि, अंगुरिन रेख निहार।
मनहिन बूझहिं काव कब, काज करे सुकुमार।।29।।

बाल बिलोकि सबै मुसकाहीं। शंभु तेज अनुकूल जनाहीं।।
तेजस्वी बल बुद्धि निधाना। सोहत लक्षण शंभु समाना।।
शरजन्मा षटमुख सेनानी। गंगा सुत पावक भू मानी।।
पार्वतीनन्दन सुर संगी। नाम नेक परु कृत खल जंगी।।
देव मनोरथ पूरण कारी। मांनु सबै जिन बाल निहारी।।
लोकाचार लोक अनुसारे। भयउ समय प्रतिकाज दुवारे।।
जथा राम ते अवध सुहाई। तथ षटमुख काशी प्रभुताई।।
षट मुख तेज ओज अवलोकी। अस मिलु सन्तति चाह सबों की।।
गृह आश्रम महिमा त्रिपुरारी। मान पाउ सब चह उर धारी।।
काह न शंभु तनय प्रिय लागा। जिन देखा तिन सुर बल जागा।।
पितु सुर बल साधन संस्कारे। अनुसारे शिशु बाढ़ अगारे।।
विद्या बाल सुहावहिं वोही। पिता चार जग जन्महि जोही।।
विगते अल्प काल दिन माहीं। बय किशोर भुजबल उभराहीं।।
षटमुख विहरहिं चढ़ि सुर याना। दरसहिं देव देश गति नाना।।
देखिअ जहं तहं दनुज अनीती। तिन ते आपु घटिय मन प्रीती।।
जग पर पीर दुराउब ताहीं। बचपन ते उपजा मन माहीं।।

बीज विचार यथा संस्कारा। सन्तति बनु तथ शास्त्र उचारा।।
षटमुख नाम उमा शिव लाला। भयउ समर्थ गयउ कुछ काला।।
भयउ विदित शंकर परिवारा। बाल विभाग न जोड़ तिहारा।।
जाहि निहारत देव मनावत। दीन दशा सुर यूथ बितावत।।
युग बदलन सुर दल मन ठाने। रह दुख पाछिल ते उबियाने।।
दनुज दोषवृत्ति दुर्गुण ढेरे। एक नाहि रहहीं बहु घेरे।।

इत बैरी गनि दनुज कुल, षटमुख चिन्तन कीन।
पितृ प्रेरणा ते जगिय, करन्ह असुरता हीन।।30।।
सुरन्ह प्रतीक्षा इहि करत, बिगताये चिर काल।
योग विलोके नाशि खल, होहीं खूब निहाल।।31।।
सुर धाइअ काशिय नगर, पहुंचि उमापति धाम।
पद नमनत वन्दन करत, बतराइअ निज काम।।32।।

जयति शिवा शिव जग हितकारी। पालक पोषक भय संहारी।।
सृष्टि बीज प्रभु पुरुष सनातन। परमानन्द स्वरूप सखा तन।।
वरद विधाता भव सुख दाता। चाहत देव सहित विधि त्राता।।
नाथ आप जग अन्तरयामी। तुमहीं विश्व तीन पुर स्वामी।।
जानत मोर व्यथा भय कारन। बनेउ गृहस्थ सोई दुख टारन।।
भै षटमुख तारक वध तांई। नाथ योग सो गै नियराई।।
निज कुमार प्रभु आयसु देहू। तारक वधहिं करहिं रण नेहू।।
सुनि सुर विनय शंभु स्वीकारा। कह सुर हिते बाल अवतारा।।
पर गुह धर्म सिखावन करई। बाल वदन रण भार न धरई।।
संग समर्थन लाइअ गिरिजा। जाइ तनय कछु औरउ सिरजा।।
पीर अधीर दिखाइ विधाता। बोले वचन सुनहु जग माता।।
बिनु तारक वध देव दुखारी। जाइ नाहि बिनु षटमुख रारी।।

पल विचार शंकर करिय, पुनि बोले हरखाइ।
गृही योग भाखइ जौन, कहुं सो सुनु चितलाइ।।33।।

जौ अभिषेक होइ स्कन्धा। जाइ छूटि बालक अनुबन्धा।।
बनि गृहस्थ गहि रण अधिकारा। करैं समर दुख होइ निवारा।।
लोक दोष सब जांहि दुराहीं। नीति न कवनिउ करैं मनाहीं।।
बूझि आश मन सफल विधाता। मोद समान हृदय मन गाता।।
कहं विधि काह नाथ मुख भाखा। दिवस भिषेक रचावन राखा।।
बूझि विचारि मनहुं सब खानी। दिन अभिषेक उमापति ठानी।।
त्वष्टापुर षटमुख रजधानी। करु तहं राजतिलक जग जानी।।
श्रवन शब्द अस सुर विधना के। श्रवन समात जयति मुख आके।।

नभ भेदी जय घोष गुंजाइअ। आग करन का सो मति लाइअ।।
षटमुख राज तिलक तैयारी। होन लाग गृह विधि अनुहारी।।
आयसु शम्भु सबै प्रिय लागा। उपजा राज तिलक अनुरागा।।
षटमुख भवन नगर थल धरनी। लागी होन साज सुख करनी।।

भयउ ढिढ़ोरा पुर नगर, षटमुख राज अभिषेक।
सुनु जे ते हर्षित बनेउ, गूंजा देश प्रत्येक।।34।।

जब ते जन्म षडानन पायउ। नित नव मंगल मोद सुहायउ।।
पुलकित पिता धाम पुर काशी। सुर मुनि विप्र जांनु हितराशी।।
भुवन चारि दस भूधर भारी। बरसहिं देव भूमि सुख बारी।।
रिधि सिधि सम्पति भव सम्पन्ना। मिलइ लोक सबु मन प्रसन्ना।।
भल इच्छा नर नारि सुजाती। शुचि अमोल सुन्दर सब भांती।।
कहि न जाइ कछु नगर विभूती। जहं हर कृपा देव करतूती।।
सब उर छोह शंभु दरबारा। जयति सुनावत सुर परिवारा।।
ता गृह तनय षडानन देवा। होन समर्थ भई सुर सेवा।।
मंगल मूल तनय अखिलेश्वर। पाइअ राज तिलक शुभ अवसर।।
वन्दनवार पताका सोहा। बाजि दुन्दुभी जग मन मोहा।।
नाना भांति नगर पुर साजा। देव सिंहासन मध्य विराजा।।
तेहि आसन स्कन्ध विराजे। संग सुहावत देव समाजे।।
पहुंचेउ चहूं ओर आमंत्रन। जहां शुभद सुर मानव तंत्रन।।
जिन पावा तिन वेगि सिधावा। परम मनोहर मन हरखावा।।
आये राज तिलक हित हेते। देव अप्सरा प्रिया समेते।।
सुर ब्रह्मादिक देव अनेका। सम संयोजक साध श्रमेका।।
वेदाचार समय अनुसारे। राज तिलक कर्मठ अरुवारे।।
अस्त्र शस्त्र सम्पति सब खानी। सुर मुनि मनुज आप अनुदानी।।
दीन्ह हार अस विष्णु विधाता। अवलोके यम मन भय खाता।।
गिरिजा कवच अइस पहिनावा। ब्रह्म अस्त्र जा भेदि न पावा।।
अरुण वरुण वाहन अस दीन्हा। समता गरुड़ तासु गति कीन्हा।।
एक ते एक भंयकर भारी। मिली शकति आसुरि संहारी।।
बनु कुमार बल ब्रह्म समाना। शंकर तनय देव वरदाना।।
महिमा तासु बनिय अनकूता। करइ जौन रक्षण सुर पूता।।
विजयाशीश पिता महतारी। कतहूं बनै काहु ते रारी।।
जो विचरइ तीनउ पुर याना। मिलु रण करन्ह प्रतिष्ठित प्राना।।

राजतिलक आशीष बल, कार्तिकेय लै संग।
नृपति शकति धारण करिय, मन पुरुषारथ जंग।।35।।

तजिय सिंहासन नृप नव, गयउ मातु पितु ओर।
चरन नमत निज माथ धरि, पुनि स्तुति कर जोर।।36।।

नमः शिवायास्तु निरामयाय नमः शिवायास्तु मनोमयाय।
नमः शिवायास्तु सुरार्चिताय तुभ्यं सदा भक्तकृपापराय।।1।।
नमो भवायास्तु भवोद्भवाय नमोऽस्तु ते ध्वस्तमनोभवाय।
नमोऽस्तु ते गूढ़महाव्रताय नमोऽस्तु माया गहनाश्रयाय।।2।।
नमोऽस्तु शर्वाय नमः शिवाय नमोऽस्तु सिद्धाय पुरातनाय।
नमोऽस्तु कालाय नमः कलाय नमोऽस्तु ते कालकलातिगाय।।3।।
नमो निसर्गात्मक भूतिकाय नमोऽस्त्वमेयोक्षमहर्द्धिकाय।
नमः शरण्याय नमोऽगुणाय नमोऽस्तु ते भीमगुणानुगाय।।4।।
नमोऽस्तु नानाभुवनाधिकत्रे नमोऽस्तु भक्ताभिमतप्रदात्रे।
नमोऽस्तु कर्मप्रसवाय धात्रे नमः सदा ते भगवन् सुकर्त्रे।।5।।
अनन्तरूपाय सदैव तुभ्यम् सह्यकोपाय सदैव तुभ्यम्।
अमेयमानाथ नमोऽस्तु तुभ्यं वृषेन्द्रयानाय नमोऽस्तु तुभ्यम्।।6।।
नमः प्रसिद्धाय महौषधाय नमोऽस्तु ते व्याधिगणापहाय।
चराचरायाय विचारदाय कुमारनाथाय नमः शिवाय।।7।।
ममेश भूतेश महेश्वरोऽसि कामेश वागीश बलेश धीश।
क्रोधेश मोहेश परापरेश नमोऽस्तु मोक्षेश गुहाशयेश।।8।।

बाल विनय सुनि मुद बनेउ, जगदीश्वर पितु मात।
सकल विश्व बाधा हरन, दीन्ह शक्ति ता गात।।37।।
विश्व देव पितु मात तहं, करि कृपा बहु खानि।
विजय सुशासन नीति बल, विपुल थमाइअ आनि।।38।।
बूझि बालमति भावना, तुरत उमापति राय।
कराशीश प्रदान करिय, बैन कहा हरखाय।।39।।

जाहि तनय नाशहु असुराई। गृही साधना पौरुष लाई।।
सुरन्ह हितारथ युग परिवर्तन। मनुज प्राण करि प्रत्यावर्तन।।
जेहि विधि धेनु धरा द्विज हित बन। करु सोई दै राजशकति धन।।
मात पिता लै सुर आशीषा। मानि वचन सबकै धरि शीशा।।
चले समर तारक खल मारन। बिनु चिन्ता मन ढेर विचारन।।
विचरु लोक त्रय जौन विमाना। षटमुख ता चढ़ि करिय पयाना।।
गहि रण धरनी गर्जन कीन्ही। सुनि तारक चिन्ता मन दीन्ही।।
भै सुर गर्जन केहि बल बूते। जानन्ह हेतु पठाइअ दूते।।
सोचु आपु बिनु कोउ बल पाये। ना संभव सुर गरज सुनाये।।
दूत आइ बुझि समर हवाला। फिरि लग तारक कह ततकाला।।

नाथ सेन सुर रण ललकारै। लै लै तारक नाम पुकारै।।
गरजहिं तड़पहि लागहिं ऐसे। वज्र पात बनि लड़िहहिं जैसे।।

दूतन्ह वाणी खल सुनत, बना क्रोध अंगार।
साजिय सेना हेतु रण, गर्जा करि हुंकार।।40।।
बाहें फड़की पद पटकि, कहेउ अबहि छणमांहि।
गर्दि मर्दि सुर सेन सब, देहुं पताल पठाहि।।41।।

मेघ गर्जना गरजन वारे। तारक सेना समर पधारे।।
समर तयारी इत रण हेते। रहसंग षटमुख देव समेते।।
आवत सुनि तारक बलवन्ता। सुरन्ह गरजना करिय तुरन्ता।।
तारक नाम सुने जे भागहिं। ते रण करन्ह बान धनु साधहिं।।
क्रोधावेश समर खल धावा। ज्वालामय तन रूप दिखावा।।
यदपि होहिं नभ असगुन बानी। तबों न चित चिन्ता खल मानी।।
ज्यों ज्यों गरजन त्यों उत्साहा। हेतु समर रण आउ अगाहा।।
चाहत असुर देव दल दाहन। सुरन्ह सोच असुरेश बिदाहन।।
एक दूज मन भै रण भेरी। भई ढेर नहि तेरी मेरी।।
भयउ कोलाहल मारू बाजा। चाह परस्पर लड़न्ह समाजा।।

उधर सेन लै बड़ असुर, नाना विधि ललकार।
चरन धमाका ते धरनि, कांपहि बारम्बार।।42।।

रोषित बैन असुर ललकारी। भिरु मोसम को आउ अगारी।।
करि राखेउ सुर शकति विहीना। अब योधा को बनि रण कीना।।
होहिं जासु भुजबल अधिकाई। तेहि सन्मुख रण हेतु बुलाई।।
नाहित गर्दि देव सब संगा। पाउ न कोउ मजा इहि जंगा।।
होहि गरजना मेघ समाना। रण मेरी परसहि भय नाना।।
बाजत कर्कश नाद रणे का। ताल ठोकहीं दैत्य अनेका।।
भवा कोलाहल रण थल भारी। सुनै न कोऊ काहु गोहारी।।
बनेउ आप यमराज निकेता। अब की देवासुर रण खेता।।
एक ते एक भयंकर भीमा। छूटहिं शर जा शक्ति असीमा।।
शंकर सुवन षडानन नामा। शोभित समर यान बल धामा।।
लागे इन्द्रादिक सुर साथे। तारक वधन उठायउ हाथे।।
एक दूज मारहिं चिग्घरहीं। जीति सकै जो ताते भिरहीं।।
मारु मारु सबके रटि लागी। ऐसी क्रोध अग्नि तहं जागी।।
रुण्ड मुण्ड भै धरनी ताला। जेस मुंह बाइ ठाढ़ रह काला।।
कहि न जाइ रण व्यथा कहानी। मारहिं मारु सबै मुख बानी।।
क्रोध भयंकर तारक लावा। षटमुख मारन सोच बनावा।।

मारत काटत सुर दल घाती। करिय षडानन ते रण बाती।।
लड़न्ह चाह तो सन्मुख आवा। आन आड़ नहि शकति दिखावा।।

षटमुख रण उत्सुक परम, कीन्ह बात स्वीकार।
पर तुरतहि आगिल भयउ, वीर भद्र सरदार।।43।।

चलत समर षटमुख पितु माता। पठवा गण रक्षण सुत गाता।।
तेहि अवसर आगे चलि आये। मारन तारक समर मचाये।।
लागे करन्ह विविध परहारा। रण अभिलाष असुर अनुसारा।।
तारक समर चाल पहिचानी। इन्द्रादिक सुर दल सेनानी।।
घात लाइ सुर आपनि बारिय। वज्र अस्त्र तारक पर मारिय।।
गुत्थमगुत्था जूझन लागे। चलि चलि एक दूज सब आगे।।
शिव गण नायक भद्र सिपाही। मारहिं असुर सेन बिलगाहीं।।
देखहिं जहां सुरन्ह कमजोरी। वेगि धाइ पहुंचइ तेहि ओरी।।
बड़ विलोकि ताते चलि भिरहीं। मारहिं असुर गरजना करहीं।।
जावहि अस्त्र शस्त्र बनि ज्वाला। हेतू असुरन भांति कराला।।

खल सेना घबड़ानि अति, इधर उधर विखरानि।
सेना गति तारक निरखि, क्रोध अगिन मन सानि।।44।।

निज दल तितर बितर घबड़ाई। तारक देखि बहुत झुंझलाई।।
तुरत करिय माया निज जारी। दस हजार भुज सिंह सवारी।।
लड़न्ह लगा करि समर भयंकर। देखि अचानक डरेउ देव वर।।
होन लाग सुर सेन संहारन। भय समानि भै हार कगारन।।
पुनि करि असुर सेन घमसाना। अस्त्र शस्त्र रचि माया नाना।।
भै सुर सेन विकल भयभीता। होइ मने अब रहब न जीता।।
सुर रक्षक विष्णु हितकारी। देखि दुर्दशा चक्र संभारी।।
लागे आपु लड़न्ह रण मांही। पर इन्ह हाथ मरन खल नाही।।
खल विष्णु रण जूझन लागे। हार न जीत नाहि कोउ भागे।।
कुपित वार हरि चक्र चलावा। मिलि सुर सकल वार संग लावा।।
मिनट मूर्छा असुर सताइस। पुनि खल उठि विष्णु पर धाइस।।
चक्र शकति कर दीन्ह बिखण्डन। बड़ हाहा मचिगा रण अंगन।।

छाइ निराशा मन सुरन्ह, तारक शौर्य विलोकि।
सुर हारेउ भागन चहेउ, कह विधना तब रोकि।।45।।
तारक ओर निहारि तब, करि विधना संकेत।
आइ समय शर साधु अब, सुर जीवन हित हेत।।46।।
हारब जीतब खेल रण, रह निशि दिन सब साथ।
पर तारक वध भावि कह, षटमुख तुम्हरे हाथ।।47।।

पार्वती नन्दन जगवन्दन। कार्तिकेय खलपति बल भंजन।।
समर योजना तुम्ह बल ठानी। बिनु तुम्हरे खल पाउ न हानी।।
बार बार सुर खांहि पछारा। अब की बेर भांति हर बारा।।
काल कराल थामि निज हाथे। करहु न देर मारु खल माथे।।
होइ अभय पुनि देव समूहा। श्रवन समाहि नाहि खल हूहा।।
जीवन जन्म बूझि उद्देशा। मानि विधाता कै उपदेशा।।
कहि तथास्तु स्वीकारा एही। समर लाइ नाशब खल देही।।
समर घोषणा करि शिव नन्दन। माना खल करि गर्ज प्रचण्डन।।
असुर बैन कहि करिय विवादा। आउ कुमार लेहु रण स्वादा।।
अस कहि चला असुर रण माता। लावत काल रूप मुख बाता।।
जानि जाइ केहि मा बल कितना। षटमुख बदलु पैतरा अपना।।
तजि निज यान धरा पग भयऊ। उल्का शक्ति ज्योति कर लयऊ।।
रे रे दुष्ट लेहु अजमाहीं। कितना बल सोहत केहि बाहीं।।
तारक स्वयं चला तेहि खानी। रण घोषणा यथा सुर बानी।।
दोऊ धरनि धर समर मचावन। राखि मने इक दूज नशावन।।
भयो अथिर सुर हिम ऋषि जेते। देखन्ह खलकुमार रण खेते।।
न पल बीत बात न चीता। होन लाग रण कौतुक रीता।।

करिय नमन पितु मात को, रण में शंभु कुमार।
पितृ शक्ति बल तेज लै, फेकन्ह लाग्यो वार।।48।।

एक दूज पर करहिं प्रहारा। आपु बचावहिं विविध प्रकारा।।
छूटत भिड़त अगारत पछरत। बल पराक्रम पैतरा बदलत।।
सुर गन्धर्व देवता किन्नर। नभ पथ ठाढ़ देखहीं रन वर।।
फीकी भै रवि ज्योति जगत की। महि कांपी गति रुकी पवन की।।
सुरन्ह अधीर दशा मुख देखन। ढाढ़स देत कुमार अनेकन।।
जैसन बार बिदारइ काई। पवन झोंक घन यूथ उड़ाई।।
तानुसार षटमुख कर वारा। करै असुर बल पौरुष छारा।।
शक्ति षडानन अस आघाता। छिन्न भिन्न भै तारक गाता।।
मरै न जौन असुर विधि कोऊ। वार कुमार सहा न वोऊ।।
गिरा समर त्यागिस निज प्राना। सुर बैरी तारक बलवाना।।
कटा देव दुख भै जयकारी। असुर सेन भागिय चहुंवारी।।
गये पताल निज प्राण बचावत। भै सुर सुखी शंभु गुण गावत।।
शिव समेत सुर भयउ अनन्दा। स्तुति करहिं देव गण वृन्दा।।
बाल कुमार गोद उर लाई। करिय प्यार गिरिजा हरखाई।।
बरसहिं सुमन होइ जय नादा। उत्सव विजय पसरु सम्वादा।।

बाजहिं बाजन विविध प्रकारा। फिरहीं अभय देव परिवारा।।
करहिं देव गण बहु गुण नाना। बनु जेस ते तेस कीन्ह बखाना।।

समय ताहि परिवार हिम, आइ प्रशंसेउ बाल।
धन्य कहत स्तुति करत, कह तुम कीन कमाल।।49।।
धाइ चरन षटमुख परेउ, हिम कुल पित्रन्ह साथ।
कह ताको जग नाहि भय, जापर तुम्हरो हाथ।।50।।

जे तहं आउ पूंछि कुशलाई। षटमुख बल साहस बुधि गाई।।
पूछहिं एक एक रण हाला। खल मारेउ भांती केहि लाला।।
योग न जथ तथ करि दिखरावा। उमा गृहस्थ तपोबल पावा।।
तप करि जे सन्तति उपजाहीं। तिमे ब्रह्मबल आप समाहीं।।
मन अभिलाषा पूरण कारी। मिलहीं शक्ति देव व्रत धारी।।
ताहि भानुकुल कमल दिवाकर। मुक्त रखहिं त्रय ताप मिटाकर।।
कह षटमुख षट साधहिं जेई। स्वर्ग गृहस्थ बनावहिं तेई।।
सुरन्ह आप निष्कंटक जानी। बोलहिं मुदित मनोहर बानी।।
कथिय महेश गृही प्रभुताई। पाइय तनय देव बलदाई।।
मने सबहि उतरेन दुख पारा। रोधन खल बल भाव उपारा।।
उत्सव विजय विविध विधि बातन। पूरण भयउ शिवा शिव साथन।।
भावी रण विधि असुर विनाशी। परसिय ढंग विविध अविनाशी।।
जहं गिरिजापति देव षडानन। तहं सर्वश भव सुमति उथानन।।
जहं सुमति तहं सम्पति नाना। जहां गृही सद तहं सुख साना।।
हेतु गृहस्थ देव बल तांई। पावन सुमति सदा सुखदाई।।

परिणय धर्म गृहस्थ शिव, सुरन्ह आप हित मान।
कह जग मा जे भांति शिव, राखब तापर ध्यान।।51।।
संग षडानन रहन्ह सुर, शिव सन दीन्ह विचार।
सुनि गिरिजापति मानि भल, मुदे कीन्ह स्वीकार।।52।।
सब सम्मत प्रस्तुत भयउ, धाम हिमालय खेत।
तहं सुर बल निश्छल रहहिं, बोलेउ कृपा निकेत।।53।।

बाल भले पर लगत सयानो। रण विलोकि हम दोउ मन मानो।।
करहु निवास हिमालय आनन। देव संग तुम तनय षडानन।।
सुर सम्पदा सोह सब भांती। देव गठन साधन हित बाती।।
बिनु सुर गठन धरनि सुख नाही। रहहिं धरा जन सब दुख मांही।।
जथ गृहस्थ जीवन सुख मूला। तथ महि सुख धरु हरु त्रय शूला।।
जेहि विधि बनइ सुरन्ह हित करनी। जांनु सोई मानव हित धरनी।।
जेहि विधि व्रती मात पितु गाता। तथ सन्तति बनु वचन विधाता।।

जेस धरनी धर आप संवारे। विश्व प्रकृति ताहि अनुसारे।।
धरिय मात पितु आयसु अन्तर। षटमुख सोचु बनब साधक वर।।
देखत देव हितारथ सपना। बचपन ते षटमुख मन अपना।।
गृही साधना गिरिजापति कै। जग देखिय सन्तति भल मति कै।।
शिव परिवार वचन जग भाये। जे सुनि ते सुरता पथ धाये।।
गृह महिमा जग भयउ उघारा। देखिय गिरिजापति व्यवहारा।।
निज जप बल तन तनय सुहाये। गिरिजा हर विलोकि हरखाये।।

बार बार अवलोकि सुत, करत शकति अनुदान।
देव देश हित नीति दइ, चह बसु हिम स्थान।।54।।
नवयुग धरनी थापि पुनि, दुष्वृत्ति करहु विनाश।
देव ज्योति विस्तृत करहु, पूरक जन अभिलास।।55।।
सुभल सेन बल बाह्य रख, आप तपोबल संग।
कुमन जीति जौ राज करु, तौ न हारु कहुं जंग।।56।।

वन्दि मातु पितु पावन चरना। सुर समेत षटमुख करि गमना।।
गिरि कैलाश हिमालय नगरी। जाइ बसेउ परिसर पितु बखरी।।
इतइ उमा शिव चलि निज धामा। आये भवन जपत हरि नामा।।
गृह महिमा धरनी प्रगटाई। मानिय देव मनुज हरखाई।।
ता सन्तति उपजइ हित देशे। करि तप जे गृह योग प्रवेशे।।
देहिं नाहि सो काहु क्लेशा। रहहीं भल भाखिय गिरिजेशा।।
निर्गुण सगुण लोक हितकारी। भव उत्पत्ति रक्षक संहारी।।
दीन दयाल लोक हित देवा। साधि गृहस्थ योग महदेवा।।
आप इतइ उत देव षडानन। परसहिं लोक देववृत्ति राधन।।
धर्म गृहस्थ उभरहीं जैसे। जप तप शंभु शिवा करि वैसे।।
नित नव मंगल मोद प्रसूतहिं। देहिं आचरण शंभु सबूतहिं।।
कथनी करनी राखि समाना। लोक दिखाइ शकति भगवाना।।
धाम नगर पुर जथा सुखारी। सोई साधि चलत त्रिपुरारी।।
जब तब शंकर करहिं पयाना। देखन देश दशा व्यवधाना।।
जावहिं दूरि नेर सब ओरी। गणन्ह समेत विचरि सब खोरी।।
जब तब समय लगत पखवारा। शिव सूना गिरिजा घर द्वारा।।
सम दर्पन पति पूत जानहीं। नारि स्वभाऊ लोक मानहीं।।
बिनु दोऊ नारी रह हीना। घर सर्वस पर कबहुं सुखी ना।।
बिना पूत पति गृहे अकेली। रहत उमा बहु दिन दुःख झेली।।
इहि दुःख समाधान हित तांई। चिन्तन विविध उमा मन लांई।।
बिगड़हि बनहिं अनेक विचारा। होहिं न मन थिर उतरु न पारा।।

जाकर जापर श्रद्धा सनेहा। अवसि मिलै सो निःसन्देहा।।
पति विचरहिं जब जब पुर जाई। गिरिजा तनय होश अधिकाई।।

पूत होत पति ते सुभल, रहत भवन रखवार।
निरधारण गिरिजा करिय, अपने मनहुं विचार।।57।।

पूत लोभ प्रेरित बनि गिरिजा। घर पहरू विरचन मन उपजा।।
अनसूया व्रत बल सुधियानी। इहि विधि होब सफल मन मानी।।
पतिव्रत शकति जगत अदभूता। चाह तो लेइ विरचि भल पूता।।
अस कौतूहल व्यापु उमा मन। दूजे प्रभूता देखन इहि तन।।
इहि गृह रक्षण योग सुतारा। होत जनम बनु पहरूदारा।।
एक दिवस शंकर गण नाना। लै पुर देखन्ह कीन पयाना।।
आउ न फिरि दिन चारि बिताये। उमा शकति जागिय उतिराये।।
अवसर ताहि सखी दुइ आई। विजया जया नाम रह पाई।।
करत नमन बोली मृदु बानी। सोच हमार सखी इहि खानी।।
नन्दी भृंगी गण जित घर के। सब सेवी पर संग शंकर के।।
यदपि भले अवसर सबु ठाढ़े। रक्षतु आउ नाहि पल गाढ़े।।
जहं तहं जब तब अवसर आवत। लगु भल इनते चलहुं बचावत।।
तनय नुहारे अवसर ताही। लगु भल सेवी इहि जग मांही।।
एक तनय सोहत हिम धामा। दूज रूप स्वामी जग कामा।।
होत तनय जौ संग तुम्हारे। सम सहयोग बनत रखवारे।।
जेस रोगी तेस वैद्य दवाई। जहां तहं विधि बनत सहाई।।
जौन उमा मन दिन ढेरन ते। जागु अवरु सखियन्ह प्रेरन ते।।
तीनि जहां तहं विधि रचनाई। देहिं विधाता आपु पठाई।।
दीन्ह विधाता रचि संयोगा। करन्ह उमा चलि तप प्रयोगा।।

तनय रूप रखवार गृह, उमा रचन्ह मन कीन।
बार बार स्वामी चरन, ध्यान श्रद्धा मय दीन।।58।।

जग अनसूया जाहि तपोबल। देव तीन शिशु गढ़िय गते पल।।
सो तप बल धारिय जग जननी। होन फलित कीन्ही कर करनी।।
अक्षत पुष्प नीर लै हाथा। रहा ध्यान स्वामी पद माथा।।
करिय विनय भाखिय अस बानी। मने कर्म वच जौ चित्त सानी।।
तौ प्रभु पुरवहु मम अभिलाषा। तुमहिं पाउं सुत रूप प्रकाशा।।
इहि अवसर इहि चाह हमारी। पुरवहु प्रण तुम पूरब धारी।।
स्वामी शकति उमा चित व्यापा। चाह नुसार महेश प्रतापा।।
एक तो आप जगत महतारी। दूज परम तप पतिव्रत धारी।।
तीज कृपा जहं सृष्टि विधाता। पाइय भाव सुरक्षण नाता।।

पल प्रमाण विगतेउ दुइ चारी। लीन्ह विनय सुनि जग हितकारी।।
उमा भावना मन अनुसारे। तनय स्वरूप प्रगटु तेहि ठारे।।
मातु निहारि मुदित मन लाला। करत प्रणाम बोलु ततकाला।।
जानि पूत दीजइ आशीशा। अस कहि तुरत धरिय पद शीशा।।
पूत स्वरूप जानि जगदम्बा। कर परसा आशिष अविलम्बा।।
परम मोद मन गिरिजा अन्तर। देखि फलित पतिव्रत तप मन्तर।।

जोरि दोऊ कर ठाढ़ भा, बाल विनीते भाव।
मातु मोहि आदेश करु, काहे कीन बुलाव।।59।।

देव पुरुष छबि रूप किशोरा। सुगढ़ सनेह लगत तन जोरा।।
जथा जरूरत गिरिजा माता। लागत बाल रूप तेस गाता।।
रह अनुशासित आयसु मांगे। जेस कोऊ शिक्षित बड़ आगे।।
मातु वचन स्वीकारा मोरा। बार बार विनवहुं कर जोरा।।
जापर कृपा तुम्हारिन होई। काज कठिन जग ताहि न कोई।।
जिन संशय राखउ मन मांही। आयसु पुरवहु चलि सब ठांही।।
पाइ मातु जे तुमहि समाना। करहिं लोक त्रय ता सम्माना।।
ज्यों ज्यों निकसु बाल प्रिय बानी। त्यों त्यों उमा शकति अनुदानी।।
बनि अजरामर होउ सयानो। जेस रांचिय जग पिता विधानो।।
ममतामयि जग जननि भवानी। तन सहराइ जानि सुत खानी।।
शेष शकति कछु रहिय न कोऊ। जौन उमा ते पाउ न वोऊ।।

बाल अभय कीन्ही उमा, काल तलक भय टारि।
नाम करण पर कीन्ह नहि, राखि आश त्रिपुरारि।।60।।
दण्ड थमाइअ बाल कर, रक्षण भवन प्रबास।
बैरी प्रविशइ न भवन, राखेउ इहइ प्रयास।।61।।

इहि विधि करि आयसु महतारी। संग सखी गृह बीच पधारी।।
लागी होन परस्पर बाता। पायउं स्वामि कृपा गृह ताता।।
परम मुदित मन भाव उछाहा। बड़ कौतूहल विस्मय राहा।।
दिखराउब आपन बल स्वामी। देहि संवारि जो देखहिं खामी।।
नहि बदलब इहि पहरूदारा। मोहि ढेर प्रिय स्वामि दुलारा।।
बाल बुद्धि हति करि प्रयुक्ता। लक्षण शुभद सगुन संयुक्ता।।
तासु दण्ड भव दोष विदारी। परु अवसर पर भेद उघारी।।
चेतन पुरूष बाल सुकुमारा। निज हाथे हम ताहि संवारा।।
सब विधि कुशल नीति पकराई। हाथ परसि पद भार थमाई।।
भगति शकति दोऊ बल ताके। सकु न जीति अनचिन्ह कोउ आके।।
सोचु गृहे गिरिराज कुमारी। संग सखिन्ह निज नीति उचारी।।

उत मन मगन बाल लै डण्डा। विचरन लाग अभय निर्द्वन्द्वा।।
भवन रखावत फिरि चहुं ओरा। मातु छड़ी लै बाल किशोरा।।
जिन देखा माना मन तेही। गृह गिरिजापति पहरा एही।।
आउ जे ते परिचय बतरावत। उत्तर उचित पाइ फिरि जावत।।
आइ केतिक जन पूंछु कृपाला। तेहि इनकार करिय गृह पाला।।
आइ गये इहि विधि दुइ चारी। रही सफल ता चौकीदारी।।
चूंगुल चोर देखि भय खावत। गृह प्रविशन प्रयास न लावत।।
भयउ विदित गिरिजा पति भवने। रूप पाहरू गिरिजा ललने।।

इत बालक पहरा करत, रहेउ शिवा अनुकूल।
बूझि सुरक्षा भांति भल, रह न उमा मन शूल।।62।।
नगर काज करि शंभु जब, गण समेत गृह आउ।
द्वार व्यवस्था देखि भल, सोचत मन मुस्काउ।।63।।
जयति शिवा शिव बोलिगण, तहां मचाइअ शोर।
सुनत पाहरू बनि सजग, ठाढ़ द्वार मुख ओर।।64।।

सहित सेन शंकर गति देखिय। गृह स्वामी मनहीं मन सोचिय।।
सुनिय लोक मुख परिचय जैसे। शंकर रूप दीखु सो तैसे।।
उपजी श्रद्धा अंश प्रभुताई। घटइ नाहि मिलि भयो सवाई।।
अवसर आज प्रथम बनु सोई। पूत पिता सुख संग संजोई।।
बले मातु बालक पहिचानेउ। पर बिनु परिचय पितु अनजानेउ।।
पूत विनय वाणी सुख सानी। पिता मने अन्तर प्रविशानी।।
चाह महेश्वर गृहे प्रवेशन। आयउ जेस हलि जात हमेशन।।
पर इहि बेर पाहरू आवा। जात भवन अवरोध लगावा।।
पावत लोक अतिथि जेस माना। सोई व्यवहार पाहरू आना।।
जोरि पानि आगे भा ठाढ़ा। बोला वचन प्रीति जेस गाढ़ा।।
नमन करत नावत पद शीशा। कह कछु मोहि देउ मति दीशा।।
जो जन आउ आप शरणाई। होइ अभय कह लोग लुगाई।।
हे पुर स्वामी दीन दयाला। मोहि लागत तुम जग प्रतिपाला।।
विश्व द्वार यह विश्वनाथ कै। नहि आवहि इहि चोर घात कै।।
जैसे आप जगत रखवारू। ता भांती हम मात दुवारू।।
बाल रूप हम तुम पितु नाई। सहित सेन चाहत गृह जाई।।
जयति तुम्हार बतावत एही। जेस तुम लोक हितारथ नेही।।
हाव भाव व्यवहार विचारा। करत सिद्ध जेस तुम घर द्वारा।।
चाल ढाल आचरण तुम्हारा। अवलोकउं आदर्श प्रकारा।।
द्वारपाल हम तुम जग पाला। लोग कहहिं मोहि गिरिजा लाला।।

गिरिजा तनय तुम्हार दुवारा। सेवत दिन दुइ चारि गुजारा।।
लै परिचय तब भवन पठावा। अस आयसु मम मातु लगावा।।
राज गृहस्थ नीति अनुशासन। अनुसारे ताकर करि पालन।।
दूज गृही पहरू अधिकारा। मांगु न परिचय बनइ गंवारा।।
धर्म गृहस्थ लोक कर्त्तव्या। पालु जे भल ते गनु जग भव्या।।
आज क्षमहु सब दोष हमारन। दै परिचय तब करउ पधारन।।
जौ चाहत इहि गृह प्रवेशा। परिचय देन कौन अन्देशा।।
आउ जे इहि ते रहत पुनीता। ताहि पाइ हमरउ भगु भीता।।
नाथ बिना परिचय सब खानी। बिनु जाने बनु मम नादानी।।
पदक प्रतिष्ठा बचु केस मोरे। पूंछउ नाथ दोउ कर जोरे।।
जानि बूझि सो पथ अपनाई। जाहु मातु ते ताहि बताई।।
मोसे भूल करावत काहे। जदपि चलत जग तुम मति राहे।।
मोर काज गृह द्वार रखाउब। काज तुम्हार लोक हित लाउब।।
जेहि विधि द्वारपाल हित होई। चाह मोरि प्रभु कीजै सोई।।
जहं गिरिजापति गिरिजा लाला। आपु भागु तहं बैर विषाला।।
जहां गृहस्थ धरम प्रतिपाला। प्रेम गठन तहं सोह निराला।।
दीनबन्धु जे दीन दयाला। कहं चाकर पर मारत भाला।।
जो जानत त्रय पुर गति हाला। जांनु न केस सो कुलज हवाला।।
जाने बिनु जे जगत जानहीं। केस नहि सेवक बात मानहीं।।
देव दनुज मानव हिम जासे। का सेवक भल आश न वासे।।
कोपावेश तुम्हार गोसांई। हम का आड़ि सकत जग नांई।।
मांगत परिचय आयसु पाली। सब तुम्हार तुम्हहीं सब माली।।

श्रद्धा सनेहन नीतिमय, सुनिय पाहरू बैन।
शंकर मन विस्मित भयो, पर आवा मन चैन।।65।।
मनहुं तर्क लागे करन्ह, बाल बुद्धि बलवान।
आपु पदे जो रह अडिग, सोई पात्र सम्मान।।66।।
बाल दोष कछु नाहि इहि, निर्माता कै दोष।
निपटब आगे ताहि ते, कीन्ह शान्त आक्रोश।।67।।
गईं पहुंचि तबलौं तहं, द्वारपाल कै मात।
बोली परिचय देव हम, जानहुं बालक नात।।68।।
स्वामी पद वन्दन करत, गिरिजा शीश नवाय।
नाथ पधारहु चलि भवन, सुत परिचय हम गाय।।69।।
परिचय पाछ तुम्हारि भै, बालक परिचय आगु।
औढरदानी रूप तुम, देत रहत जो मांगु।।70।।

दीन्ह तुम्हार दीन्ह नहि आना। भले न रूप तनय पहिचाना।।
जब तुम जात नगर अवलोकन। रहत न द्वार परावा रोकन।।
आउब जाब रहत मन मानी। पावत गृही व्यवस्था हानी।।
जब तब जहं तहं अवसर आवत। बिनु तुम्हरे गृह निन्दा पावत।।
आवा गवा चिन्हा अनचीन्हा। मिलन तुम्हार चाह जे दीन्हा।।
पावहि भल उत्तर केहि ढंगा। बिनु पाहरू आत्मिक अंगा।।
आपु व्यवस्था कुल अनुसारे। द्वारपाल भै चाह हमारे।।
तुम स्थिति रक्षक संहारी। तुम से अभिन्न लोक हुशियारी।।
परु जब श्रवन जयति जय बानी। द्वार पधारन हम अफनानी।।
हम जानत परिचित तुम नाही। परिचय कथत काह प्रिय नाही।।
तनय तुम्हारु मोर रचावन। द्वारपाल पद करइ निभावन।।
परिचय मांगि डिगा न पूता। अंश तुम्हारो एहिय सबूता।।
द्वार पाल इहि पूत हमारा। सच मानउं प्रभु शपथ तुम्हारा।।
दिन एकू सूना गृह लागा। उपजा नाथ चरण अनुरागा।।
नाथ मनाइअ मांगन कीन्हा। दीन्ह तुम्हीं पर तुम्ही न चीन्हा।।
बार बार पद वन्दि गोसांई। आपन पतिव्रत बल अजमाई।।
नाथ कृपा बनि ज्योति स्वरूपा। सन्मुख प्रगटु तनय अनुरूपा।।
दै तेहि द्वार पाल पद भारा। रह मांगत परिचय जो तुम्हारा।।
नाथ कहउ केस चूक हमारी। करत भवन जो चौकीदारी।।
श्रेय हमार कीन तुम रचना। सोऊ काज करत तुम्ह भवना।।
उत्पत्ति तनय उमा सब भाखा। नामकरण तुम आशा राखा।।
वचन विनीते देव सुखारे। मन आवेश खोउ त्रिपुरारे।।
भयो मुदित मन परम उछाहा। पाइ तनय बुधि नैतिक राहा।।

उमा तनय संग भवन चलि, बैठे आसन लाइ।
प्रेम परस्पर भाव भल, गृह मर्यादा ध्याइ।।71।।
रूप तनय अवलोकि शिव, कीन्ह आप स्वीकार।
होवत जैसे लोक मंह, चाह देन संस्कार।।72।।
गृही सीख पितु मातु कै, कृपा सिन्धु ततकाल।
करिय व्यवस्था देन तेहि, बूझि पियारो लाल।।73।।

गई बदलि मन स्थिति सारी। हरखे ढेर लोक हितकारी।।
मन माथे जहं छाउ तनावा। तामें मोद मनोहर छावा।।
शुभद वार तिथि नखत विचारी। आइ नगर ऋषि मुनि दुइ चारी।।
बाल जनम उत्सव भल रांचन। कीन व्यवस्था जगती नाथन।।
तानुसार रचना शुरुवावा। आपु कृपानिधि जेस मन भावा।।

पुर काशी शिवपुरी सुहावनि। बसहिं जहां गंगा मन भावनि।।
ता पावन जल प्रणव समाना। रह जेहि परिसर शंभु मकाना।।
गृह मर्यादा लोक नुसारे। रह जेहि परिसर शिव परिवारे।।
चहूं बुलावा लगेउ पठावन। नामकरण उत्सव करि गावन।।
अबिलम्ब गण जन धाइ अंटाये। शंभु बुलावा हेतु बताये।।
भू ते देव लोक तक गमने। उत्सव बाल सुनाने श्रवने।।
सुनि जे मोद समानेउ ह्रदय। उपजहिं बानि शिवा शिव जय जय।।

जे सुनि सोचन लाग मन, अबकि तनय त्रिपुरारि।
चलि कुल पद पूजन करब, आरति रहब उतारि।।74।।

घर गिरिजा पति आवा सोई। जाकर नाम जपत शुभ होई।।
परमानन्द पूर मन शंकर। तुरत बुलाइअ सुर नंदीश्वर।।
नेर आश्रम ऋषियन घर चल। करि बुलाउ आवहिं उत्सव पल।।
अत्रीश्वर आश्रम ऋषि जेई। दीखु व्यवस्था उत्सव तेई।।
अनसूया जग जननि भवानी। मांनु उमा तिन्ह सासू खानी।।
उत्सव जन्म व्यवस्था देखन। होन काव केस करि संकेतन।।
काशी कष्ट निवारक नगरी। मंगलदीप जलहिं हर बखरी।।
देव यान लै कीन्ह पयाना। नभ पथ होन लाग तिन आना।।
शिव सुत उतसव जनम मनावन। नामकरण संस्कार करावन।।
तीरथ धाम सकल ऋषि आये। देखन्ह उत्सव हरख समाये।।

आउ देव ऋषि काशि थल, ठहरत शंकर धाम।
शिव आयसु नन्दी लिए, करत व्यवस्था काम।।75।।
पुर नर नारी तक चलेउ, उत्सव देखन हेत।
रिद्धि सिद्धि आई तहां, आश्रम कृपानिकेत।।76।।

शोभा नगर धरा अनतूला। जहं हरि विधि बरसावहिं फूला।।
ध्वजा पताका नगर सुहावत। विश्वकर्मा जेहि गढ़त बनावत।।
वृन्द वृन्द मिलि चलिय लुगाई। सहज सिगांर देव तिय नांई।।
कनक कलश मंगल भरि थारा। गावत बैठहिं शंभु दुवारा।।
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार शिव कुल पद धरहीं।।
बहु विधि बनहिं चरन अनुरागी। बनिय मुदित मन जानि सुभागी।।
होवत नगर गली जयकारा। लगु काशी थल स्वर्ग दुवारा।।
देखन बाल जनम परसंगा। हिम तक आउ बसे तट गंगा।।
गूंजत नगर हाट शहनाई। जयति शिवा शिव मुख ध्वनि आई।।
अगर समेत सोह दीपावलि। नाच गान बाजा पुलकावलि।।
विविध रंग नभ उड़त अबीरा। हर मन मन्दिर पुलक शरीरा।।

काशी पुर सोहा इहि भांती। दिवस भांति दिखराहीं राती।।
देव वन्दि जन गायक टोली। गावत मंगल करत किलोली।।
दिव्य ज्योति लै शशी दिवाकर। भयो सथिर काशी थल आकर।।
देखि महोत्सव सुर नर नागा। फिरहिं मुदित बरनहिं बड़ भागा।।
बाल जनम उत्सव अनुसारा। रह शिव भवने वेदाचारा।।
शोभा कहि न जाइ वहि दिन की। काशी उत्सव नाम करन की।।
तेहि अवसर जेहि विधि जे आवा। दीन्ह महेश ताहि मन भावा।।
जेस बुधि जासु मांगु तेहि खानी। पूर करिय तेस औढर दानी।।
दरसन बाल सबै अभिलाषी। करत प्रयास नगर पुर दासी।।
उत्सव जन्म निभे इहि भांती। मंगल मोद मनोहर बाती।।
लोकाचार नीति अनुसारे। धर्म गृहस्थ महेश संभारे।।
परमानन्द प्रेम सब फूले। बाल विलोकत भागहि शूले।।

सबकै मन सन्तुष्ट करि, मनसा मांग नुसार।
चिर जीवी होवइ तनय, शोर विश्वपति द्वार।।77।।
लागि सभा नर देव ऋषि, विधि विष्णु छबि साथ।
नामकरण चर्चा बनिय, बात गूंजि सब माथ।।78।।
गिरिजा गोदी बाल छबि, संग स्कन्ध कुमार।
दांयांसन गिरिजापते, शोभा अपरम्पार।।79।।

इहि छबि पुनरपि गनि दुसवारा। मनहिं नमत सुर कुल परिवारा।।
लगेउ आरती आपु उतारन। प्रेम मुदित मन पारी पारन।।
बाजहिं बाजन विविध विधाने। मंगल मोद मनोहर गाने।।
नामकरण विधि करिय तयारी। रिद्धि सिद्धि ऋषि नारि विचारी।।
लोक वेद विधि शिव अपनाई। करि पूजन भव देव मनाई।।
देव पितर षोडश उपचारे। पूजन करिय भाव सतकारे।।
मोद प्रमोद सुपावन गाता। जानि लोक हित हरखु विधाता।।
परिचय बाल करन्ह संस्कारे। भा घोषित ऋषियन अनुसारे।।
नियम नुशासन वेद नुकूले। पालेउ शंभु मुदित मन फूले।।
जेहि विधि बाल बनै संस्कारी। सोमति साधि उमा त्रिपुरारी।।

अदभुत बालक जन्म जग, शंभु सभा उपराइ।
जाना माना आपु जेस, परिचय तथा कराइ।।80।।
महिमा पतिव्रत धर्म गृहि, जे साधिय ते देव।
सम तुलना नाहिय तुलइ, अस भाखिय सुर देव।।81।।
नारि पालुअस आप व्रत, बनु सो उमा समान।
नाही संशय जग करहिं, दीन्हेउ शिव वरदान।।82।।

काशी धरा धाम बनि बासी। बल गृहस्थ जग स्वामि प्रकाशी।।
सभानुशासन समय प्रशासन। पालहिं शंभु मानि हित आपन।।
मनुजाचार शास्त्र व्यवहारा। पालि महेश रचहिं परिवारा।।
कह जहं धर्म गृही न पालन। कुमति दोष वृत्ति साधहिं लालन।।
जग तन जो पतिव्रते रचाऊ। व्यापु न तापर काल प्रभाऊ।।
आपु महेश बतावन लागे। बाल जनम परिचय सब आगे।।
महिमा पतिव्रत गृहि गुण गाइअ। निज पत्नीव्रत बल दिखराइअ।।
धन्य धाम गृह योग बतावत। आप बिती संसार सुनावत।।
सबै बुलायन आपु निकेते। उत्सव नामकरण हित हेते।।
बाल जनम लेहू सब जानी। दीन्ह भांति केहि उमा भवानी।।
तापर वचन भाखु जगदम्बा। भये जेस बाल जनम अबिलम्बा।।
पायउं जाहि व्रते संग स्वामी। सो जप तप व्रत हर सब खामी।।
करि तेहि नमन स्वामि चित लाई। तनय स्वरूप लोक प्रगटाई।।
तेज ओज स्वामी अनुहारे। गयउ प्रविश तन तनय हमारे।।
जगताधार तीन पुर स्वामी। जानत सबु जग अन्तरजामी।।
बोले वचन मोद मन साने। कुल समेत रह कृपानिधाने।।
पत्नीव्रत पतिव्रत रखि गाते। शिशु रचि सकहिं सबै पितु माते।।
पालन मातु सीखु पितु बानी। लोग प्रमुख मानै सब खानी।।
पतिव्रत बले बाल रचु माता। पत्नी व्रत पितु बुद्धि विधाता।।
बदलब आपु तनय बुधि ठांऊ। पत्नीव्रत बल अइस दिखाऊं।।
थूल सूक्ष्म साझा प्रत्यक्षा। सुर नर मुनि अवलोकहिं अक्षा।।
परिचय बाल बुद्धि अदभूता। सुनेउं श्रवन अस हृदय सबूता।।
इते बाल शिर हम निरमारी। कारण नाम करण अधिकारी।।
जथा शीश बुधि तथ अनुसारे। नाम देव ऋषि ताहि उचारे।।

शिव आयसु अनुसार तहं, बदलन शीश स्वरूप।
ऋषिन्ह मंत्र श्रुति करि कथन, जौन समय अनुरूप।।83।।
विधि विष्णु सुर देव मिलि, करन्ह लगे जयकार।
धरिय पुष्प अक्षत अंजलि, बोल उठे त्रिपुरार।।84।।
एक नारि व्रत साधि हम, जौ कीने तप ढेर।
तौ चाहत इहि बाल सिर, उपजइ हेरा फेर।।85।।

तप बल रचैं विधाता सृष्टी। तपबल होत धरा धन वृष्टी।।
तथा तपे व्रत उपजइ काया। केसस न फरु पत्नी व्रत माया।।
तीन लोक पति देव न ताके। पर तप देव ठाढ़ भै आके।।
शंकर जौन कीन मनमाहीं। जग दिखान प्रगटा तेहि ठांही।।

करिय विचार मनहिं जगनाथा। बुद्धि विशाल हेतु तथ माथा।।
इहि शुभ योग जागु इक कारन। मुदित मने करि गज चिग्घारन।।
जहं मंत्र ध्वनि होइ प्रवाहन। करु तप शकति जौन आवाहन।।
बनु ध्वनि जौन बहिर प्रभावी। तानुसार उपजइ फल भावी।।
गज शिर रूप सोह तन बाले। भयो विलय शिर पूरब वाले।।
रूप बुद्धि कै कोषागारा। तेहि निहारि भा जय जयकारा।।
धीर गंभीर धरम धन साना। गज मुख देखि सबै मन माना।।
बाल बुद्धि बनु माथ नुसारे। अस विशाल जो न कहुं हारे।।
करइ शुण्ड ते जौ आहारा। रहु पुनीत तौ जीवन सारा।।
दिव्य वदन मुख गज अनुरूपा। जीवन जन्म लोक सुखरूपा।।
विश्वपूजि पद होहि सुखारे। बूझि शुभद गुण नीति विचारे।।
लोक जनम अस काहु न पावा। मोर तनय जेस पाइ सुहावा।।
पूजनीय प्रथम जग जोगे। सुर नर मुनि अस बैन प्रयोगे।।

गिरिजा काया गढ़ गढ़िय, शीश गढ़ेव त्रिपुरार।
बल प्रदान सुर वृन्द करि, शास्त्र नीति संस्कार।।86।।

तप बल तनय मनोहर गातन। बाल विदित बनु रूप गजानन।।
कर सहराइ संभारि संवारी। बार बार गिरिराज कुमारी।।
पूत सनेह समेत महेश्वर। दीन्ह आप बल शकति विशेश्वर।।
कर फरसा विष्णु अनुदाना। वर ब्रह्मा रह होउ महाना।।
दीन्ह लेखनी शकति शारदा। वर सावित्री विश्व तारदा।।
पूरक होन वचन प्रत्येका। ऋषि मुनि आशिष दीन्ह अनेका।।
इन्द्रादिक सुर दल परिवारा। दीन्ह महावर आप प्रकारा।।
आये नारदादि मुनि जेते। बनु पूजित कह गौरि समेते।।
अत्रि आदि अनसूया मुख ते। देवाध्यक्ष बनउ हर गण ते।।
रिद्धि सिद्धि बनि जीवन माली। दीन्ह सिद्धि वर जाइ न खाली।।

वर बल वैभव बाल संग, सभा समाज प्रसन्न।
नाम घोषणा बाल कै, करिय क्रिया सम्पन्न।।87।।
पारी पारी ते कथिय, सब मिलि बालक नाम।
विदित तीन पुर सो बनेउ, गणपति मंगल धाम।।88।।

बाल अनन्तचिद्द अवनीशा। आलम्पत अति मीत मुनीशा।।
एकाक्षर इक दन्त लभेवा। बिघ्न रहित ईशानू देवा।।
एक दृष्ट द्वैमातुर दुर्जा। भुवन भवोपति भीमू ऊर्जा।।
सकल सिद्धप्रिय शंभु विचारी। गौरि तनय गज वक्र दिखारी।।
सब सिद्धान्त रूप शशि वर्णम। जांनु अखूर देव सुपकर्णम।।

भाल चन्द्र गज कर्ण गजानन। देवेन्द्राशिक मूसक वाहन।।
देवव्रत देवांतक नाशी। चतुर्भुजोति गदाधर राशी।।
बुद्धि नाथ सुर बुद्धि विधाता। सिद्धि विनायक भव सिधि दाता।।
बुद्धि प्रिये मोदक परमोदा। गणपति धर्मी धूम बलोदा।।
गुणिना हरिदा पाषिण नन्दन। गजनानेती सर्व सुरत्मन।।
रक्त पुरुष पीताम्बर श्वेता। कपिल कवीष स्वरूप अचिन्ता।।
कीर्ति कृपा कर क्षित्र महाबल। गणाध्यक्ष गणपति भव मंगल।।
गण दक्षिण गजवक्त्र हेरम्बा। कृष्ण पिगांक्ष तनय तुम अम्बा।।
लम्बकर्ण लमबोद सुरेश्वर। विध्न विनाशि उदण्ड महेश्वर।।
शुभ गुण कानन हे प्रथमेश्वर। रुद्र पियारू शुभ विध्नेश्वर।।
नमस्तेस्तु गं मुक्ती दाया। मूढाकरम मृत्युंजय काया।।
गणपति वर बड़ वरद विनायक। वक्रतुण्ड बल बुद्धि विधायक।।
विद्या वारिधि विध्न विनाशी। यज्ञ काम योगाधिप राशी।।
विकट विश्व मुख महती करमा। परम यशस्विन तारुण धर्मा।।
गणपति रूप विधुनमति हारी। विध्नराज भव विध्न विदारी।।
वर प्रदमहर क्षमा धिकारी। नाद प्रतिष्ठ मनोमय भारी।।
उमा पुत्र तुम गणपति धीरा। निदी स्वरम स्कन्ध सबीरा।।
मात पिता तप रूप स्वरूपा। नाही दूज कोऊ अनुरूपा।।
कीजे नाम नमन स्वीकारा। देव रूप हिम नाति दुलारा।।
नाम अनेक देव ऋषि गावा। सुर अगुवा कहि घोष करावा।।

नाना नाम पुकारि तेहि, कीन्ह सुरन्ह उद्घोष।
बाल नाम वन्दन करत, भागहिं कलुषित दोष।।89।।
बाल आरती पूजिपद, सुरन्ह मोद मन लाय।
अग पूजित वरदान वर, दै गै स्तुति गाय।।90।।
तुम बैरी जग नाहि कोउ, कह महेश इहि खानि।
तन रचना मम शक्ति कै, अभय फिरउ मन मानि।।91।।
क्षमा विनय बालक करिय, सभा ओर शिर नाइ।
माथ लाइ पितु मातु पद, सेवक रूप बताइ।।92।।
कृष्ण चौथ रह भादपद, बालक उत्सव पर्व।
पूजनीय तिथि शिव कथिय, सभा सुनाइअ सर्व।।93।।

गणपति ज्ञान ध्यान चरिताई। भाव भगति जे करिय पुजाई।।
साधइ इहि व्रत पर्व समाना। होइ सुफल कह कृपानिधाना।।
काज कामना शुभ प्रयासा। पूरहिं सहज मनो अभिलाषा।।
काज कोउ अस न जग मांही। व्रत गणेश पुरवहिं न ताहीं।।

काली चौथ सकल जे सेवा। लाइ भगति पद गणपति देवा।।
तिते मुदित बनु सुर परिवारा। सभा समर्थन बैन हमारा।।
अगहन कृष्ण चौथ आराधन। पूजि लेइ करि विपति निपातन।।
माघ आदि चौथी तिथि जेई। मानि व्रत शशि दरसन लेई।।
रोग दोष दुख दारिद मूला। जेतिक भूल भटक भव शूला।।
देहि दुराइ गजानन कूला। आपु साधि जे तिन अनुकूला।।
सेउ मात पितु भाव समर्पित। सहज लेइ करि सुरवर अर्जित।।
शब्द नाद जग ब्रह्म स्वरूपा। मात पिता बच ब्रह्म अनुरूपा।।
वचन नुशासित जे जन रहहीं। ब्रह्म शकति सो पाउ सहजहीं।।
देखि देव तेहि हरखहिं आपू। मिलइ ताहि वर गणपति मापू।।
रहु शायद जौ गणपति सेवी। चलहिं साथ तेहि गिरिजा देवी।।
नहि समताई गणपति पूजन। सरल देव अस और न दूजन।।
मंगल वदन सुमंगल दाता। बुद्धि विनायक सिद्धि प्रदाता।।
मंगल भवन अमंगल हारी। देव दनुज नर कुल हितकारी।।
कुल परिवार चाह कुशलाई। गणपति जनम भयो इहि तांई।।
मन जाके अस देव न भावा। सुरन्ह मने सो नाहि सुहावा।।
जहां न गणपति पूजन होई। भव बाधा तहं आपु संजोई।।
भवाभीष्ट फल पूरण कारी। शक्ति देव अस वर बल धारी।।
सहित सभा शिव शैलकुमारी। तनय महिम वर व्रतन उचारी।।
अवसर सभा समापन ओरे। नमन करिय शिव कुल कर जोरे।।
जौन मनुज सृष्टी हित धरनी। सोई करहिं शिवा शिव करनी।।
मानहिं लोक हितारथ पूजा। नाहि छोहाहिं साधने दूजा।।
अनुष्ठान गृह शंकर साधिय। तानुसार जीवन मति बांधिय।।
जौ नहि जीवन व्रत अनुसारा। अनभल जांनु सदा संसारा।।
व्रत वरणीय शंभु मुख बानी। फल मुक्ती प्रद जे नुष्ठानी।।
समय नुकूल देखि भल अवसर। करिय विनय विष्णु विधि मिलकर।।

जगताधार सुरेश प्रभु, तुम नाशक भव शूल।
रखेउ शरण सेवक समझि, कुल महिमा अनतूल।।94।।

सुरन्ह देव आराध्य हमारे। भल विधि शोभित संग परिवारे।।
विश्व आत्मा जीवन दाता। अगुन सगुन सब रूप विधाता।।
आउ जो विपदा आगु हमारी। दिहेउ पिछाड़ी सम संहारी।।
तुम समरथ योगें आराधन। दइ माया मुक्ती फिर बांधन।।
विष्णु पोषक हम निर्माता। तुमहूं दोउ शक्ति प्रदाता।।
नाथ रूप बल नाथ प्रकाशक। दुर्गुण दोष दुरूह विनाशक।।

आप चराचर जीवन स्वामी। सब देखत अस अन्तरयामी।।
ब्रह्म तत्व भव रूप तुम्हारा। जेस इच्छा करु तेस निरमारा।।
समरथ तबहुं गृही पद ठाना। जानत सब पर बनि अनजाना।।
भेद आन नाही सकि भासत। आपु प्रकाशे विश्व प्रकाशत।।
त्रिविध त्रिगुण त्रय रूप तुम्हारा। नेति नेति कहि वेद पुकारा।।
कबहुं काशि कबहुं कैलासन। कबहुं पांच मुख कबहुं गृही बन।।
योगी कबहुं कबहुं वैरागी। तपसी कबहुं कबहुं कामागी।।
अनबन स्तुति भेद विहीना। बल तुम्हारे हम दीन अदीना।।
नाथ कृपा इतनी दिखराया। करिय विदा नहि मोहि भुलाया।।
प्राण प्रकृति आत्मा रूपा। देव रूप हे काशी भूपा।।
जब सुमिरउं तब सुनेव गुहारी। कुल समेत वसुधा हितकारी।।
स्वामी रूप सहित जगदम्बा। किहेउ न देर सुनेउ अबिलम्बा।।
करि शिव स्तुति विविध प्रकारा। फिरेउ सुरन्ह दल निज घर वारा।।
इत कुल लै जगदम्ब महेशा। करि पालन संग गृह उपदेशा।।
पार्वती कुल साझा हेता। रचु गणेश गजवदन समेता।।

अमर कथा फल पाउ शुक, रावणादि अमराइ।
औढर दाता औढरी, रचु सुत आपुन नाइ।।95।।
निज आश्रम ऋषि मुनि गयो, नमनत बारं बार।
गयउ नाहि स्कन्ध पुनि, धाम हिमालय वार।।96।।
कुल समेत शंकर शिवा, धर्म गृहस्थ संवारु।
गृही नीति उद्भव करत, सत अध्यातम उचारु।।97।।

दोऊ तनय परम बल कारी। भयोविदितत्रय लोक मझारी।।
पाइ गणेश अगन वरदाना। लह पांचो सुर मंह स्थाना।।
बनु महेश मय गणपति रूपा। गौरी शक्ती शक्ति स्वरूपा।।
धारन नराकार क्षमताई। धरनि पसारन मंगलताई।।
गौरि गणेश महेश दिवाकर। रूप विष्णु अवतरत धरा पर।।
इत सुर पच अवतार धिकारी। रूप अरूप पूज नर नारी।।
देव धरहिं जब मनुज शरीरा। ते अवतारि कथहिं बुधि बीरा।।
तन अवतारी लोक नुसारे। पाउ जनम जीवन सनसारे।।
जेहि सुर खानि मिलहिं गुण जामें। ता सुर अंश भाखु जग वामे।।
मंगल वदन सुमंगल कारी। गौरि तनय गणपति तन धारी।।
बढ़ेउ धरनि जब अत्याचारा। हेतू दमन लीन्ह अवतारा।।
सम गणपति सुख स्रोत न आना। वेद शास्त्र कथु सकल पुराना।।
वाहन वदन विविध परकारा। धरि धरि करिय मनुज उद्धारा।।

जथा राम संग रह हनुमाना। अर्जुन साथ कृष्ण भल माना।।
बल गायत्री युग ऋषि साधिय। दैबल सीख नवल युग थापिय।।
तानुसार गणपति धरि गाता। नाशि दुगुण बनु सगुण प्रदाता।।

अष्ट रूप गणपति धरिय, धरा उतारिय भार।
मात पिता वर देव बल, करि सबकै उपकार।।98।।
कुल अनुसारे आपु बल, जग हित दीन्ह लगाय।
सुनत भगत आरत बैन, तन धरि पहुंचहिं जाय।।99।।

गणपति आप गुणेश स्वरूपा। नाम नेक तन धरि बहु रूपा।।
देह काज अनुसारे नामा। जानहिं लोक लोग वसुधा मा।।
गौरि तनय तन मंगलकारी। करहिं लोक हित पितु अनुहारी।।
जब जहं लोक बियापु अनीता। तेहि विनाशि करि देव अभीता।।
आदि आज लों लोक प्रमाना। सरल सुभल के गं समाना।।
कश्यप बार एक यज्ञ कीन्हा। महिमा तासु अदिति मन चीन्हा।।
करिय विनय बोली कर जोरे। उपजेउ देव तनय बनि मोरे।।
पर अब नाथ मने अभिलासा। चहत सच्चिदानन्द प्रकाशा।।
तुम सब जानत ज्ञान निधाना। पुरवहु जौन चाह सन्ताना।।
प्रिया वचन परम प्रिय लागा। वचन सनेहन भाखु सुभागा।।
बनु गणपति अवतारण जैसे। न्यास ध्यान व्रत विधि कह वैसे।।
अदिती पति आयसु अनुसारे। गणपति ताप ध्यान अरुवारे।।
मुदित गणेश कहेउ वर मांगा। अदिति प्रगट करि पूत नुरागा।।
गणपति करिय वचन स्वीकारा। हम आउब बनि तनय तुम्हारा।।
पूरक मनसा मंगलकारी। बनु सुत देह भुजा दस धारी।।
सिद्धि बुद्धिमय तेज स्वरूपा। तन रचना लगु सुर अनुरूपा।।
ग्राम नगर जन आश्रमवासी। भाखिय निरखि बाल सुखराशी।।
तासु महोत्कट नाम धरावा। संस्कार दइ पोषण लावा।।
धरनि असुर खल जे रिपुनाई। तिन्हहिं बधिय दै सुख पितु माई।।
मां पितु पाठ बले संसकारे। पाउ तनय गुण जग संसारे।।

सत्य धर्म मर्याद बल, जब जब लोक ओरान।
सुरन्ह सुरक्षा दीन्ह बल, शिव समेत सन्तान।।100।।

मैथिल नगर नृपति इक बारा। जप ते लह अमराइअ चारा।।
वर बल तद उन्मत्त नरेशा। लाग देन भल जनन कलेशा।।
सुर इन्द्रादिक वन्दि बनावा। नाना भय सुर हेतु उगावा।।
भल ते बैर अभल प्रीताई। राजनीति सब दीन्ह भुलाई।।
जहं राजा अगुनी अतिचारी। तहं प्रजा सब भांति दुखारी।।

सुर अकुलाइ फिरहिं घबराई। बनिय विवश गुरु गृह गे धाई।।
बीती व्यथा सुनावन लागे। करि करुना अपने गुरु आगे।।
सुनिय बृहस्पति कह समुझाई। इहि दुःख गणपति सकै दुराई।।
जांइ सहज मिलि थोरेन सेवा। सो समरथ इहि काज सुदेवा।।
सुनि गुरु वचन देवगण सबहीं। ध्याइअ गणपति निशिदिन भजहीं।।
सरल देव शुभ मंगलकारी। गणपति विदित रह्यो चहुं वारी।।
मात पिता सुनि सुनि प्रभुताई। ढेर मुदित ममता गरुवाई।।
देव विनय सुनि प्रगटे हाली। गौरी तनय सुमंगल माली।।
दशभुज देह धुरन्धर धारी। मयूरेश बनि असुर संहारी।।
छूट देव दुःख भव सुख व्यापा। भव बढ़ु गिरिजा घर प्रतापा।।
जे गणपति भजि नाम पुकारा। सुनिय विनय करि ताहि सहारा।।
धूम केतु कहुं रूप गजानन। गंग तनय कहुं सिंह सवाहन।।
हेतु व्यास बनि सिद्धि प्रदाना। महाकाव्य लेखन अनुदाना।।
जन्म सोऊ तिथि आंका व्यासे। चौथि अंजोरी भादौं मासे।।
हल्दी दूब सिन्दूरी चन्दन। पुष्प बताशा करु मन रन्जन।।
पूज इतइ जे ता मनसाई। पुरवहिं अवसि गणेश सहाई।।
विविध भांति शिर रूप शरीरा। वाहन विविध गहिय रण धीरा।।
विविध ब्रह्म अरु सौर पुराना। कथ स्कन्धे लिंग पुराना।।
मत्स्य गणेश पुरान बतावत। महिम महाभारत दरसावत।।
वेद शास्त्र सुर मनुज बखाना। नहि गणपति सम महिमा आना।।

सर्व देवमय गणपते, सर्व देव वर साथ।
सर्व शक्तिमय बुद्धि मन, सकल सुमंगल माथ।।101।।
मात पिता दायित्व लै, हरत धरातल भार।
काज सफल जेहि विधि बनै, धरु सो रूप वतार।।102।।
परसहिं दैवी सम्पदा, वृत्ति आसुरी खोइ।
सुनहिं जहां आरत वचन, जाइ तहां अस बोइ।।103।।

गिरिजापति गणेश तन धारी। ब्रह्म स्वरूप सुमंगल कारी।।
सकल गुणी पौरुष बुधि दाता। रहत व्यापि सुर नर तन गाता।।
मंगल नाता जीवन त्राता। सेवी परम चरन पितु माता।।
जे करु मात पिता सेवकाई। ब्रह्म शकति चलु तेहि पछुवाई।।
अन्तर असुर बसैं बहु रूपा। वृत्ति रूप प्रगटहिं भव कूपा।।
सुर सुरता मानव मनुजाई। लहत न रोक देत बिलवाई।।
जे करु गौरि गणेश उपासन। सहजइ बनु ता दुष्वृत्ति नाशन।।
रहइ सदा सत्वृत्ति ता साथे। जीवन सोह करम भल हाथे।।

धर्म गृहस्थ मात पितु नाता। तेस गणपति चलु संग सुभ्राता।।
आसुरि वृत्ति नशावत फिरहीं। धरनि धाम चहुं नगर विचरहीं।।
वाहन सिंह शक्ति बल साजे। करहीं काज सुधार समाजे।।
भीम देह बल भय दिखराइअ। मनुज देह बल ब्रह्म सजाइअ।।
धर्म आस्था बल आध्यातम। चहुं पसराइ मिटाइ अघातम।।
मत्सर कुमति करिय संहारा। जो मिलु पितृ भगत परिवारा।।
वक्र तुण्ड अस डारि प्रभाऊ। सुरता भाव धरा उपराऊ।।
जहं तहं मूसक साजि सवारी। करहिं मदासुर वध चहुंवारी।।
आपु दिखाइ महोदर रूपा। दै जग शिक्षण गुरु अनुरूपा।।
सब उर ब्रह्म ज्ञान प्रकाशा। इहि विधि मोहासुर विष नाशा।।
योग शकति बल सिद्धि प्रदायक। रूप गजानन बुद्धि विनायक।।
लोभासुर ताते संहारिय। भटकन अवगुन भूल सुधारिय।।
छबि लम्बोदर ते बनि शोभन। करि अन्तर क्रोधासुर दोबन।।
जन मन कामा सुर प्रभुताई। कीन्ह नियन्त्रित पितु मति नांई।।
विकट नाम तन धरि इहि काजे। करिय गणेश्वर लोक समाजे।।
मनुज सुधार समय परिवर्तन। सुभल बनाइअ धारि कइव तन।।
विष्णु ब्रह्म वाचक भव नामा। बिध्नराज अवतार धरा मा।।
ताते ममता सुर संहारी। चलि चलि धरनी ठांव हजारी।।
धूम वर्ण रहु शंभु स्वरूपा। इहि तन शकति पिता अनुरूपा।।
जेहि ते नाशेउ अभिमानासुर। पाउ मुक्ति बनु शुभद पथातुर।।

मति बदले गै युग बदलि, बदला लोक समाज।
सुमति जगाइअ सब मने, करि शिवकुल सतकाज।।104।।

वाहन संस्कार अवगाहन। तेज रूप उर सोह गजानन।।
जेहि अन्तर गणपति प्रभुताई। आपु सकल सुर ताहि सहाई।।
साध जे गणपति पूजन वन्दन। चिन्तन मनन कथन गुण श्रवन।।
पाउ विमल सदगुण सदचारा। रिद्धि सिद्धि गणपति प्रकारा।।
सकल सुमंगल जीवन ज्योती। विकसइ फूटि चलइ बहु स्रोती।।
मंगल मूरति गिरिजा नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन।।
पूरक लोक अर्थ अभिलासा। काज शुभद नवयुग प्रयासा।।
संग मर्याद गृही प्रशासन। शिव साधहिं साथे कुल आपन।।
बालक दोऊ शास्त्र नुसारे। आप आचरण लोक पसारे।।
काशी नगर स्वर्ग सम लागे। जे विलोकु ते करु अनुरागे।।
हेतु दरस जन करहिं पधारन। मनुज बजाय देव परिवारन।।
संस्कार आचरण पुनीता। गिरिजापति कुल ते सब प्रीता।।

रूप रंग वाहन अनमेला। नाहि दिखाइ काहु ते मेला।।
आठ पांच मुख शोभा काहू। वाहन बैल सिंह अरि छाहू।।
षटमुख केऊ गजानन रूपा। रचना शक्ति केऊ भव कूपा।।
सपनेउ अरझइ नाहि झमेला। जदपि परस्पर सब बेमेला।।
सुमति गठन सहकार निधाने। एक दूज प्रिय सबै ठिकाने।।
धर्म यथोचित गृह अनुशासन। पालहि सबै मानि हित आपन।।
व्यापु तिते बेमेल ते मेला। साध जौन सफले सो खेला।।
लखि आचरण उमापति करनी। देव भूमि भै भारत धरनी।।
व्रत यज्ञीय सुशासन देवा। विकसित भयो दिवाकर सेवा।।
वेदाचार विहार विचारा। भा ब्रह्म मंतर सबै पियारा।।
देवाचार फरा भल फूला। कुमति स्वभाव मिलै न भूला।।
गिरिजापति परिवार नुसारे। मिलहीं चलत सबै परिवारे।।
करि पितु मात चरन सतकारे। नमनहिं प्रातेउ देव कुमारे।।
आयसु मांगि करहि पुर काजा। देखि चरित मुद नगर समाजा।।

मनुज हितारथ भांति बहु, करहीं चरित अनूप।
मंगलतन गिरिजा ललन, मय विवेक बहु रूप।।105।।
देखि युवा तन शौर्य छबि, भवा व्याह अनिवार।
चलन लगी चर्चा गृहे, दिवस गये दुइ चार।।106।।

ब्याहे योग तनय भै दोऊ। आगिल काह पाछ करि कोऊ।।
करउं काह विधि इहि निगरारा। बहु विधि गिरिजा ईश विचारा।।
समाधान जौ मनहिं समाने। तापर निर्णय करिय ठिकाने।।
एक दिवस करि प्यार पुकारन। सहित सनेह सराहि दुलारन।।
दोऊ तनय बुलाइ बतावा। हेतु ब्याह हम सोच बनावा।।
घूमि धरनि आवइ जे आगिल। करु ब्याहे तेहि प्रथम शामिल।।
मां पितु वचन मानि सुत दोऊ। धरनि फिरन उत्सुक मन होऊ।।
दोऊ बीर बली बलवन्ता। करिय आश हम फिरब अगन्ता।।
आपन बल बुधि ध्यावन लागे। शर्त पुरावन दीन्ह दिमागे।।
आयसु होइ कीन अभिलासा। जाउ त्वरित पितु मातु बकासा।।
आग पहूंचब सोचु गजानन। मोद भरा अस मनेउ षडानन।।
देर न लागी भई तयारी। हेतु बनन्ह जग भ्रमणकारी।।
मूसक बाहन देह गंभीरा। रहा न गणपति हृदय अधीरा।।
धीर वीर बल बुद्धि विवेका। जाहि मिला वर विमल प्रत्येका।।
सो गणपति मन करिय विचारा। मात पिता तन सम संसारा।।
को जग विचरि सहै हैरानी। जौ गृह घूमि सफलता आनी।।

मात पिता पद भूलि विचरना। नाही सुभल शास्त्र जग बरना।।
करि दृढ़ निश्चित गणपति एही। फेरि लगाउब मां पितु देही।।
निज बल बुद्धि ताहि अनुसारे। करन्ह प्रयोग गणेश विचारे।।
उतइ षडानन चढ़ि निज याना। कीन्हे धरनी फेरि पयाना।।
आग पहूंचब मनसा लावत। वन्दत पितु पद देव मनावत।।
जात चला पथ धाइ अगाड़ी। नाही निहारत काहु पछाड़ी।।
जथा पथिक पथ गणित लगावत। कितने समय केतिक पथ धावत।।
ताहि भांति स्कन्ध विचारत। गनि गूंथिय दिन पहुंच निहारत।।
परम मुदित निश दिन पथ धावत। विजय भाव मन जोर बढ़ावत।।
जेहि पथ आयसु करि तेस गमना। बा हरि दया विलोकत सपना।।

इत गणपति स्थिर मनेउ, कीन्ह गंग स्नान।
अर्चन वन्दन सूर्य अर्घ्य दै, गृह पूजा नित खान।।107।।
लीप पोति घर आंगन आपन, तामें चौक पुराय।
पुष्पाक्षत शोभित करिय, साथे कलश सजाय।।108।।
महादेव पूजन समे, तहां व्यवस्था कीन।
पुनि गणपति करजोरि निज, मां पितु वन्दन कीन।।109।।
विश्वरूप अखिलेश प्रभु, चलि पूजन स्थान।
होहु प्रतिष्ठित रूप महि, देहु विजय वरदान।।110।।
मानि तनय वच मात पितु, चौकासन छबि साज।
विश्व पूजन अनुसार सुत, साधेउ पूजन आज।।111।।

अक्षत पुष्प चढ़ाइअ रोली। लै गंगा जल चौ पग धो ली।।
धूप दीप आरति सतकारे। जयति शिवा शिव विनय उचारे।।
चरन नमन कीन्ही अस पूजा। सम पितु मातु देव न दूजा।।
पुनि चरनन लाइअ निज माथा। लाइ भाव जैसे जग नाथा।।
जय जय जय गिरिराज किशोरी। माता रूप षडानन मोरी।।
आदि अन्त तुम मध्य न जाना। अमित प्रभाऊ वेद बखाना।।
पूजि मात पितु चरण तुम्हारे। पाउ सुतीरथ फल संसारे।।
मोर मनोरथ जानहुं नीके। अन्तरयामी तुम सबही के।।
पूजन विविध गजानन लाई। भयो मात पितु वर फलदाई।।
यदपि विस्मित पितु महतारी। देखि सुपूजन विधि तैयारी।।
सोचु पूंछु पिछ कारन सारा। अबहिं नियम पूजन स्वीकारा।।
पूजन आशिष गणपति चाहत। रह मन भाव व्यथा कछु आहत।।
फेरि लगाइअ बेरी साते। पुष्प चढ़ावत चरनन गाते।।
बार बार मनसा प्रगटावा। गिरिजापति तब वचन सुनावा।।

सफल मनोरथ होउं तुम्हारे। चाह कौन करु प्रगट दुलारे।।

बल बुद्धि सागर गणपते, करि स्तुति बहु ढंग।
विश्व रूप गनि मात पितु, प्रनवहिं अंग प्रत्यंग।।112।।

वन्दे सुराणां सारं च सुरेश नील लोहितम्।
योगीश्वरं योग बीजं योगिनां च गुरोर्गुरुम्।।
ज्ञानानन्दं ज्ञानरूपं ज्ञानबीजं सनातनम्।
तपसां फलदातारं दातारं सर्वसम्पदाम्।।
तपो रूपं तपो बीजं तपोधन धनं वरम्।
वरं वरेण्यम् वरदमीडत्रं सिद्धगणैर्वरैः।।
कारणं भुक्तिमुक्तीनां नरकार्णवतारणाम्।
आशुतोषं प्रसन्नास्यं करुणामयसागरम्।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरौ,
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

मात पिता स्तुति करिय, हाथ जोरि शिर नाय।
मधुर बानि गणपति कहिय, भू फेरी करि आय।।113।।
शर्त तुम्हारी पूर करि, जीति लीन्ह प्रतियोग।
मिलइ शर्त फल मो प्रथम, अस करु वचन प्रयोग।।114।।

गणपति बैन सुनिय इहि खानी। गिरिजा सहित लोक सुखदानी।।
जग उपदेशक दीन दयाला। बोलेउ गणपति सन ततकाला।।
पूत पियारू मूसक स्वामी। बनेउ नाहि तुम भू अध्वगामी।।
गयउ कुमार तुहूं करि गमना। आउ प्रथम तौ करि अस कथना।।
एक तो बल वाहन गति धीमा। दूज बैठ थिर निज घर सीमा।।
जाहु जाहु भागउ पथ अपने। पुरवहु जौन कहिय हम वचने।।
होइ न आयसु पूर हमारी। तौ फटकार देइ महतारी।।
अस लागत जेस चहत न जाना। अबहुं ठाढ़ न करत पयाना।।
नहि सुहानि जौ शर्त हमारी। तौ काहे प्रथम स्वीकारी।।
जेस बनु तथ शिव कह समुझाई। पूत पिता नाता दरसाई।।
धीर वीर गणपति मुस्काने। बोले वचन मोद मन साने।।

सुनिय बूझि मत मात पितु, गिरिजा तनय रोषान।
तुम पालक गृह धर्म व्रत, का बोलत इहि खान।।115।।
बेर सात भू घूमि हम, ठाढ़ तुम्हारो आग।
तबहुं कहत नादान मोहि, जानत बाल अभाग।।116।।

तब तौ शंकर शैल कुमारी। वचन कहे कर शीश संवारी।।
कर्म न करिय धरा गिरि लांघन। खान पान जल अन्न देशाटन।।
दर्शन सुनन्ह लोक मुख बानी। मिलहीं पंथ विपति केहि खानी।।
बल बुद्धि पूजन पाठ उपासन। हम दोऊ देखिय तुम साधन।।
आश तुम्हारि विजय रस सानी। होत सिद्धि जेस बोलत बानी।।
मेधावी बल बुद्धि कुमारा। करत मात पितु पद सतकारा।।
समय जथा तथ देत विवेका। अस गणपति भजहीं जे तेका।।
आपु समस्या विधि समधाना। बोले गणपति बुद्धि निधाना।।
गृही शकति माया मरजादा। पालिय आन करायउ यादा।।
गृह महिमा गृह धर्म अपारा। नाथ आप बहु बेर उचारा।।
लोक देव त्रय गृही साधना। करि पुरवत निज आन कामना।।
धर्म गृहस्थ तुम्हार बतावत। ऐसन वेद शास्त्र सब गावत।।
गृह पाठे तुमहूं अस टेरी। नहि इक बेर सुनेउं बहु बेरी।।
मात पिता त्रिभुवन अनुसारे। तीन देव सम तन आकारे।।
तीन प्रकृति सोह गुण तीना। महिमा तीन लोक रस भीना।।
मात पिता जेस हेतु पूता। तेस पत्नी हित पति परभूता।।
उपजत जासे जग जन प्रानी। केस नहि ता त्रय पुर सम मानी।।
रक्षक पोषक सम भगवाना। त्रयपुर छोड़ि मांनु का आना।।
मांनु न जौ पितु मातु पदेशा। तौ जग निन्दा करइ हमेशा।।
मात पिता गुरु वचन विचारी। दायक लक्ष्य रहत सब ठारी।।
तीन वचन जे जात भुलाई। ताहि होहिं नहि देव सहाई।।
इन त्रय वशीभूत मन जोऊ। तासु विजय सब ठौरे होऊ।।
तीरथ फल प्रद मां पितु सेवा। हेतु मनुज खल देवी देवा।।
जे गुरु मात पिता वच शंके। ताहि अभागि विधाता अंके।।
मात पिता सम्मान बड़ाई। बेर न इक तुम रोज सुनाई।।
विचलि ताहि ते बनउ कपूता। भाउ न मोहि सुनउ अवधूता।।
देव रूप बनि गहि असुराई। कइस सहज अस शकति गंवाई।।
जे पितु मातु होत दुखदाई। तिते न देव कोऊ हरखाई।।
जे पितु मातु तीन पुर माना। होहिं सफल जग ताहि विधाना।।
जे करु नित माता पितु फेरी। ताहि मिलइ रवि शकति घनेरी।।
सो भव प्रगति विज्ञान प्रभागा। जेहि कृत समय श्रम कम लागा।।
आपु बुद्धि बल मति अनुसारे। करि पितु मातु फेरि सत बारे।।

जौ हमार निष्फल बनै, मात पिता सेवकाइ।
कह गणपति तौ लोक महं, मान न कोऊ पाइ।।117।।

बनि बालक हम कीन्ह जोउ, मात पिता पद ऊंच।
होइ मान्य जौ नाहि तुम, रोउ गृहस्थ समूच।।118।।
बनि त्रिभुवन पति मांनु नहि, दूज जगत के मान।
कुल विघटन कै नींव इहि, देइ जगत प्रमान।।119।।
जीति धर्म मृदुल वचन, बुद्धि निधान गणेश।
पिता पूत महिमा कथिय, पुनि भै चूप विशेष।।120।।

विश्व रूप गणपति पितु माता। पोषक लय स्थिति भव त्राता।।
आदि अनादि लोकपति स्वामी। ज्ञान बीज जग अन्तरयामी।।
साधत धर्म गृही जग हेता। भांति सकल भल उमा समेता।।
रूप गणेश जगत सुखदाता। अस मन मानिय ता पितु माता।।
गणपति नीति विचार स्वभाऊ। लोक पियारू जग मन भाऊ।।
जेहि विधि सुनिय लगत बड़ विस्मय। मन होवत बोलउं गणपति जय।।
के न करिय गणपति मति प्रीता। गनि कुल गठन पूत पितु गीता।।
राजनीति जड़ राज सुधारक। गणपति प्रज्ञा कलुष बिदारक।।
सकल बढ़ाइ देइ सुख नाना। धन वैभव कुल मेल खजाना।।
जहां धर्म धन नीति सुचारा। तहं सब आयुष्मान विचारा।।
करनी धर्म भयो सब भांती। बढ्ढु मन्दिर आयुष दिन राती।।
पाउ न गृह मन्दिर प्रभुताई। कारन तहं सब कुमति सजाई।।
किहे अनीति अगुन अतिचारा। होइ वेगि तन कै संहारा।।
गणपति अस जग प्रज्ञावाना। तासु नीति जग भाग्य खजाना।।
गणपति नीति सोह जिन पासा। सो जग विजयी बिनु प्रयासा।।
नेह नयन भरि भाव दुलारन। करिय शिवा शिव वचन उचारन।।
युग युग जियउ तनय तुम ऐसे। नीति तुम्हारि जियइ जग जैसे।।
पूत पिता नाता प्रभुताई। रहु भलता जे तुम चितलाई।।
बुद्धि तुम्हारि प्रबल बलदाई। भांति दिवाकर हर तिमिराई।।
सीख तुम्हार मानि दै ताली। देहुं आश्वासन पुरउब हाली।।
देर न होइ देत वच आपन। जो करु सिद्ध पिता प्रभु तापन।।
आत्म शक्ति बल शौर्य सम्पदा। सोह तुम्हारेउ संग सरबदा।।
गृही धर्म तुम जेहि विधि पाला। चाह मोर अस कहेउ कृपाला।।
जे पितु ज्ञान ध्यान पथ चलहीं। ताहि सुभल कहि लोग बरनहीं।।
गृही धर्म जे जन अनजाना। आश न तेहि ते कुल कल्याना।।
बहु विधि गणपति नीति बखानी। गिरिजाशंकर सहित भवानी।।

कहेउ उमापति गणपते, तुम बल बुद्धि निधान।
गृही व्यवस्था जांनु तुम, हम जेस दीन्हेव ज्ञान।।121।।

गृही बनब अनिवार अब, जौ क्षमता संकेत।
समय नुसारे पथ चलब, चाह मातपितु चेत।।122।।
चीन्हि तनय बुधि चाह बल, जौ न करिय पितु होश।
चलन्ह लगै सुत त्यागि पथ, गहहिं अनेकन दोष।।123।।
गणपति ब्याहे योग अब, विश्व विजय करि लीन।
परिणय वेगि कराइ तिन, उमा शंभु चित दीन।।124।।
गिरि सरिता लांघत तबलुं, पहुंचा जेठ कुमार।
गणपति विजयी सुनि सोऊ, पाइअ व्यथा अपार।।125।।

सोचि समय श्रम बुधि कमताई। जाइ न आपन भूल भुलाई।।
लाज लागि षटमुख लगु सोचन। होहुं काह विधि दोष विमोचन।।
मुह दिखाउं केस मां पितु आगे। बनब परिष्कृत इहि गृह त्यागे।।
ब्याह नाहि जब रहउ कुंवारा। तौ मिटु शायद दोष हमारा।।
मात पिता महिमा न जानी। होइ सिद्धि गृह नीति न मानी।।
एतिक दोष लाग संग मोरे। होहिं दूरि इहि दिवस न थोरे।।
लगत न घर भल भावत एही। जाइ दूरि बनु तपे सनेही।।
करि षटमुख मन विविध विचारा। आखिर मोहि काव अनिवारा।।
चिन्तन सकल सुनाइअ निर्णय। बिना तपे तन कहां मोर जय।।
बूझि उमापति तनय विचारा। जाहु न बन रोका बहु बारा।।
पर मन बीज व्यापु तन जैसे। भावत काज करन जग वैसे।।
तपसि मात पितु कुल परिवारा। तपइ न कैसे तासु कुमारा।।
दूजे चूक कीन सुत जोई। तप बिनु नाहि परिष्कृत होई।।
गणपति भांति षडानन बाता। लागि मने प्रिय विश्व विधाता।।
आपन चाह सलाह पिता के। षटमुख निज संकल्प जगा के।।
करि पितु मातु उपासन वन्दन। पद रज माथ लगाइअ चन्दन।।
पाइअ कराशीष बहु बारा। रह जामें बल विविध प्रकारा।।
ब्रह्मचर्य संकल्प उठायेउ। आपु कुंवार रहब मन लायेउ।।
शैल कौंच थल ओर पधारी। कार्तिकेय बनि भल ब्रह्मचारी।।
भांति षडानन तप करि जेई। सहज तासु वर बल ते लेई।।
हरखहिं गणपति उमा महेशा। एतिक लाभ बिना अन्देशा।।
जौ कातिक पूरण तिथि परहीं। नखत योग कृतिका अनुसरहीं।।
कार्तिकेय दर्शन करु जोई। काज असंभव सफले सोई।।
दोष पाप अघ बनहीं छारा। गिरिजापति अस वचन उचारा।।
कार्तिकेय संग शंभु भवानी। सदा रहब दीन्हेउ अस बानी।।
नाम मल्लिकार्जुन लाई। तहां बसे गिरिजापति जाई।।

शिव वर महिमा लह जन नाना। आगम निगम पुरान बखाना।।
आदि आज तक देव षडानन। हरखहिं सहज पाइ आराधन।।
काज गृहस्थी थामन पहले। जे षटमुखे भांति व्रत धर ले।।
ता गृह जीवन बनइ पुनीता। सब सुर ताते करइ सुप्रीता।।
होइ तासु कुल जग हितकारे। जेस बड़ मेल शिवम परिवारे।।

तनय षडानन हेतु तप, विदा दिवस उपरान्त।
गृह गिरिजा गणपति मने, सबु दिखरान अशान्त।।126।।

भवन विलोकि शोक दुखियारा। पूत वियोग न जाइ संभारा।।
ध्यान ज्ञान जप योग दुराने। जीवन दैनिक चार बिलाने।।
जे नेरे ते बनेउ समाने। जाब षडानन सबै पिराने।।
आपनि गृही दशा पहिचानी। कह समझावत शंकर बानी।।
वीर विनीत धरम व्रत धारी। तनय दोऊ भल प्रिया हमारी।।
इक विनयी व्रत ब्याह रचावत। दूज आप संकल्प निभावत।।
फेरी धरनि काज नहि सरला। करहीं कठिन श्रमे जग बिरला।।
लेइ जो करि सो मोहि समाना। तासु विजय करु आन बखाना।।
पुत्रवती जननी तुम सोई। जौ तप करु काहे तू रोई।।
तुम ते बड़ को और सुभागी। जासु तनय सदनीति नुरागी।।
विजयी तनय मोद लइ जितना। तप संकल्प मगन मन उतना।।
सोच न करु भल करि दोउ आपन। भले व्याह इक दुज बन वासन।।
करि तप जे साधइ गृह धर्मा। कुल ताके व्यापइ सतकर्मा।।
योग जगत भावी प्रभुताई। मेटि न जाइ सदा सब गाई।।
यदपि सबै निज भाग्य विधाता। व्यापे अभल कहहिं अस बाता।।
भयो जौन सो मांनु भयो भल। कृते सुभल न फरइ अभल फल।।
गणपति ओर दियउ चित आगिल। जो प्रतिकूल भूलु सो पाछिल।।
तुम सब काल जगत कल्यानी। पाउ न तुम कुल पंथ नदानी।।
मांनु कीन्ह षटमुख भल काजा। व्याह प्रथम तप करइ समाजा।।
जेहि ते भल कुल बनु सन्ताना। कथा पुरान विदित प्रमाना।।
बार बार अखिलेश्वर बरनी। तनय गजानन कीरति करनी।।
गणपति ओर निहारि निहारी। लाउ मोद मन प्राण पियारी।।
उपज न लगु चित्त सोच अगाहे। सुनि प्रियतम वच उभरु उछाहे।।
बनु जेस गिरिजा मोह दुरावा। जे भव माया जग पसरावा।।
सुत वियोग दुख दूरि दुराने। उमा श्रवन शिव वचन समाने।।
गणपति गोद लाइ मुख चूमिय। उभरा नेह नयन जल बूंदिय।।
गा जेस बिसरि बसा उर तापा। अस स्वामी कृपा प्रतापा।।

उपजा नेह परस्पर बाता। होन लगेउ दैनिक कुशलाता।।
छावानन्द गृहे सब खानी। गणपति ब्याह सोच उफलानी।।
गृह चर्चा चलु गणपति ब्याहे। नगर धाम जहं तहं चौराहे।।
आउ विलोकन वर दुइ चारी। ठहरु न कन्या तनय नुहारी।।
जेस गणपति गिरिजापति सेवी। शंकर चाह मिलइ तेस देवी।।

ठीक ठाक जो होइ भल, हमरे कुल अनुकूल।
ताही संग भांवरि रचब, आश सोई सुखमूल।।127।।

भावी भवन सुहानि बिराजी। अब की कन्या ते शिव राजी।।
रह वर ढूढ़त कन्या योगे। विश्वकर्मा मिलि साथी लोगे।।
मिला न वर कन्या अनुहारे। ढूढ़ि थका रहु विविध प्रकारे।।
सुनि गिरिजापति तनय कुंवारा। आये वेगि थका दुख मारा।।
बर परिचय बुधि बल प्रभुताई। जानिय देखि मने भल पाई।।
जेस कन्या लागत वर वैसे। होइ व्याह जानउं इहि कैसे।।
विश्व कर्मा गहि शिव शरनाई। गणपति ब्याह विचार बताई।।
निज परिचय कन्या चरिताई। प्रथम शिवा शिव द्वार सुनाई।।
एक सिद्धि दूजी बुद्धि नामा। चाहत ब्याह तुम्हारेन धामा।।
जानि बूझि परिवार नुकूला। हरखे शंभु मुदित मन फूला।।
नाम जथा तथ गुण प्रभूता। सोचु शंभु अस मिलइ सबूता।।
लीन्हेउ ब्याह मानि त्रिपुरारी। शुभ साइत तिथि नखत विचारी।।
फिरेउ प्रजापति मन हरखाई। व्याह बरात व्यवस्था लाई।।
लगे करन्ह इत शंभु तयारी। सुर पुर जाइ बरात हमारी।।
अनुसारे जे ताहि बुलावा। लै नेवता गण गै चहुं धावा।।
दिन तिथि वार समय कथनाई। करत देव नर जात बताई।।
जे वर योग बराती होई। अब की बेर बुलावा सोई।।
भुवन चारि दस भयो उछाहू। सुनि गणपति सिद्धि बुद्धि विवाहू।।
अवसर व्याह समय तिथि पाये। गांव नगर कुल बाजि बधाये।।
व्याह बरात जे शिव अनुरागे। पुर घर गली सजावन लागे।।
यदपि शंभु पुर काशी नगरी। मंगल मय रचना सब बखरी।।
तदपि प्रीति कै नीति सजावन। ऋषि मुनि देव करिय हर ठांवन।।
ध्वज पताक भल वन्दनवारे। गये सजाइ सबै घर द्वारे।।
कनक कलश सोहा हर भवना। लाग शिवा शिव काशी अपना।।
हाट बजार गली हर ठांई। गा वर कन्या नाम अंकाई।।

मंगलमय निज निज भवन, सबही आपु सजाउ।
गली गली हर द्वार घर, साजा चौक दिखाउ।।128।।

सब उत्सुक जेस आप विवाहा। सुनि पुर परइ वेद चौपाहा।।
नगर निवासी जहं तहं नारी। यूथ यूथ घर शंभु पधारी।।
देखन्ह जानन्ह मोद बढ़ावन। समय नुसारे मंगल गावन।।
लग सग दूरि नेर जे जैसे। व्याह दिवस तक आयउ वैसे।।
मंगल भवन सुमंगल होई। लेन प्रसाद जुटहिं सब कोई।।
जहं शिवा शिव गणपति देवा। चूक केसस के करइ न सेवा।।
पूजन तेल सुमंगल अवसर। सादर गिरिजा न्योति सबै घर।।
कीन बुलाउ आउ सबु धावा। युवतिन छबि नहि जाइ बतावा।।
गावहिं मंगल मंजुल बानी। सुनि कलरव कलकंठि लजानी।।
उपजइ नेह परम प्रिय लागे। मन आकर्षण तन अनुरागे।।
शंभु भवन शोभा अनतूला। देखत बनै कथत बनु भूला।।
राजत बाजत विपुल निशाने। मंगल दशा मनोहर ताने।।
कतहुं वेद धुनि ऋषि मुनि करहीं। रीति नीति केउ कहुं उच्चरहीं।।
लै वर कन्या नाम सुनामा। गावहिं सुन्दरि वेदी धामा।।
बहुत उछाह भवन पुर नगरी। बात बरात पठावन पसरी।।
सहित जाह्नवी जित सुर माता। देहिं सुआशिष बुद्धि विधाता।।
करहिं निछावरि आपु नुसारे। वैदिक रीति नीति व्यवहारे।।

ऋषि मुनि आयउ देवगण, नारदादि सब द्वार।
साजि आपु तन भांति बहु, चलन्ह बरात तयार।।129।।
अनसूयादिक जित गृहिणी, देव वृन्द पुर नारि।
घर बाहर आंगन फिरहिं, ह्रदय मोद किलकारि।।130।।
विधि विष्णु इन्द्रादि जित, अवसर तक सब आउ।
साज बाज चलु वर विदा, आयसु शंभु सुनाउ।।131।।

नन्दी आदि प्रमुख गण जोऊ। सुनि शिव आयसु गै सजि वोऊ।।
काज समाज बरात संभारन। करिय व्यवस्था सबै प्रकारन।।
निज निज रथ सब ठाढ़ सजाये। विदा भये मन उड़न लगाये।।
साज सजे सब भूपन्ह खानी। नाना भांति न जाइ बखानी।।
बनि सब सुन्दर साजि सवारी। जोहत आश बरात पधारी।।
युग अनुसार जौन जेहि याना। साजि ठाढ़ सब शंभु मकाना।।
के केस बना जाइ नहि लेखा। मय आकर्षण सब तन देखा।।
साथ बरात आप अनुसारे। जे जेस रहा लाग तेहि वारे।।
सब मन होत चलब हम आगे। पहुंचब वेगि तेज चलि भागे।।
उत गिरिजा लै नगर सयानी। वर साजन्ह सब विधि लपटानी।।
भाव भरी करि समय बिदाई। परम मुदित नहि होश थकाई।।

गणपति ब्याह सुरथ चलि आवा। सोह केतिक नहि जाइ बतावा।।
इत गणपति शोभा अनतूला। साज बाज रह घर अनकूला।।
वक्र तुण्ड छबि तिलक ललाटे। सोह मौर जामे मनि पाटे।।
गौर वदन सोहत भुजचारी। अंग अंग भल गति संस्कारी।।
गिरिजा गोद समय प्रभुताई। देह लालिमा रह सिन्दुराई।।
वर महिमा सब समय सुहानी। गणपति कथन शकति केहि बानी।।
साज बाज पुर लोकाचारा। अनुसारे पूरण सब कारा।।

सुर नर नारिन्ह करि विदा, नगर रीति अनुसार।
कहुं डमरू कहुं शंख धुनि, कहुं होत जयकार।।132।।
विदा बराती चलि परेउ, वक्र तुण्ड ससुराल।
भयो परिन्दा रथ सबहि, सुर पुर पहुंचन ख्याल।।133।।

बिदा बराती तीय निहारत। कुशले फिरहिं मनौती धारत।।
जहं तहं नगरी नारि निहारी। लिये आरती मंगल थारी।।
गावहिं गीत मनोहर गाना। मनानन्द नहि जाइ बखाना।।
होइ ब्याह वर वधू अवाई। भावी भाव आश मन लाई।।
लै गिरिजा कुल चतुर सयानी। फिरी भवन गावत शुभ बानी।।
उत बरात धाइअ पथ आपन। संग समाजन ढंग सखापन।।
धाउ सकल सेवक समुदाई। निज निज साज समाज बनाई।।
विधि हरि हर सोहत संग वैसे। विरचन सृष्टि साथ करि जैसे।।
ब्योम बरात बाजने बाजे। भयउ कोलाहल जय ध्वनि साजे।।
बरसहिं सुमन सुमंगल दाता। हरखे सुरन्ह विलोकि बराता।।
गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि शोर चहुं ओरा।।
निज निज शान शेख दिखरावत। चलत सबै पथ यान भगावत।।
दूल्ह यान नहि होइ बखाना। चलु नभ थल जल एक समाना।।
रुकइ चलइ दूल्हा मन चाहे। वातावरण अमेल विदाहे।।
जेस दूल्हा तेस सोह बराता। तानुसार कन्या गुण गाता।।
यदपि रूप मुख रह अनमेला। पर गुण मेल रचा विधि खेला।।
नहि आकर्षन भाव समर्पन। वर कन्या दुइ गात एक मन।।
इहि कारण अस होत विवाहा। जाइ जनम भर तबहि निबाहा।।
सिद्धि बुद्धि संग बुद्धि विधाता। ते उपजइ विधि युग निर्माता।।
शुभद प्रदाता मंगल दाता। नाशक सकल दोष दुःख बाता।।
तानुसार पथ लगत बराता। होहि सगुन सुन्दर शुभ दाता।।
सबै मोद मन देव मनावत। मंगल भाव बैन बनि आवत।।
मिलइ सुरभि शिशु थने पियावत। सन्मुख नकुल बेर बहु आवत।।

सानुकूल नभ देत बयारी। रवि शशि ज्योति पियार निहारी।।
भूख प्यास भय दुःख न काहू। गो रस स्वाद फरत मुख माहूं।।
मंगल सगुन सुगम संग सब के। चलु संग गणपति जहं वर बन के।।
बीच बीच वर वास बनावत। अगरु पछरु साथै लै आवत।।
असन बसन सब कै सम भूपा। खान पान रह देव स्वरूपा।।
सुख अनुकूल समय अनुसारे। सकल देव गुण अन्तर धारे।।
पहुंचेउ विश्वरूप पुर आई। शिव आयसु ठहरे इक ठांई।।

आवा जानि बरात वर, सुनिय शंख शहनाइ।
विश्वरूप अगवानि मिलि, बड़ संत्कार दिखाइ।।134।।

जहां भूप सुर योग सुहावन। करि प्रजापति तहां बनावन।।
देवाचार विचार नुसारा। जौन उचित करु तौन प्रकारा।।
मिलि आगवानन्ह देव बराता। मोद उभारु सबै मन गाता।।
देखि बनाव रुचिर अनुकूला। सकल बराति मोद मन फूला।।
मंगल सगुन सुगन्धित पाई। शंकर चाह बरातिन खाई।।
भरे सुधामय मृदु पकवाना। नाना भांति न जाइ बखाना।।
फल अनेक बर वस्तु सुहाई। खाइ जांहि सुर जांइ अघाई।।
सुर पुर मिलत जौन अहारा। भरि भरि आवा कनकन थारा।।
भूषन वसन अनेक पठावा। पाइ जाहि सबही हरखावा।।
बरसु सुमन सुर सुन्दरि गावहिं। मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं।।
पाइअ रुचिर परम सेवकाई। सबै मगन शंकर सुखपाई।।
मन पसन्द दीन्हेव जनवासा। जहां सबै सब सुलभ सुपासा।।
जहं गुणेश गणपति भगवाना। सिद्धि नगर पाइअ सब थाना।।
सकल सम्पदा तहा सुहानी। सुख अनुकूल आपु मन मानी।।
निज निज बास विलोकि बराती। करहिं प्रशंसा शंभु घराती।।
सब लग पहुंचि देव नन्दीश्वर। सुख सम्पदा देइं सर्वेश्वर।।
पाउ बरात परम सनमाना। शिव प्रजापति मानि समाना।।
जानि बियाह सिधि गणपति के। कह विधि दीन्ह जोड़ भल रचिके।।
बड़े भाग करि विधि रचनाई। गिरिजापति संरक्षण पाई।।
जहां देव सुख गृह अनुसारे। मिलइ निरन्तर निश दिन वारे।।
मन भावहिं मुख बरनि न जाई। त्रिभुवन जोड़ न इहि समताई।।

कहहिं परस्पर नारि नर, वर कन्या प्रभुताइ।
बसै दोउ जेहि लोक पुर, नव निधि तहां सुहाइ।।135।।

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं। आनन्द उमगि उमगि मन भरहीं।।
सुर नर देखन्ह ब्याह जे आये। आश प्रतीक्षा तहां सुहाये।।

प्रथम बरात देव पुर आई। ताते मन प्रमोद अधिकाई।।
सोधि लगन विधि कीन्ह विचारू। ग्रह तिथि नखत जोग वर वारू।।
मंगल मूल लगन शुभ सोहा। नभे धरनि चौमुख बल वोहा।।
धेनु धूरि वेला छबि आई। मंगल दृष्टि तीन पुर छाई।।
जोग नखत व्याहे अनुसारन। आयउ आपु बियाह निहारन।।
समय सुहावन लग अनुकूला। विश्वरूप कह वचन मृदूला।।
सुनहु देव ऋषि जे बड़ आपन। भेंट भावना लै भल साथन।।
हेतु ब्याह वर लाउ लिवाई। समय कहत भांवरि बनि जाई।।
मंगल कलश देव सजवाये। विनय वस्तु प्रिय साथ लगाये।।
लेन चले सादर इहि भांती। गये जहां वर बास बराती।।
संग सुहान सगुन शहनाई। आरति थार लिहे अगुवाई।।
सुभग सुहागिन गावहि गीता। लै वर कन्या नाम पुनीता।।
देखि बरात महेश समाजा। लाग अइस जेस वसुधा राजा।।
रहा न देखा आग न आशा। इहि छबि छटन्ह विलोकन बासा।।
समधी जानि महेश नगीचे। गयउ देव ऋषि करि शिर नीचे।।
भाव नमन कर जोरि विनीता। बोले वचन सुनहु जग हीता।।
तुम सब जानत जानन वारे। पर गृह महिमा मान उभारे।।
तानुसार हम कहउं गोसांई। मंगल शुभद घड़ी छबि छाई।।
वर बरात लै चलु गृह मोरे। अवसर पाइ कहउं कर जोरे।।

करिय तयारी ब्याह हित, शंभु देव ब्रह्मादि।
सकल देव ऋषि मुनि मनुज, संग चले सर्वादि।।136।।

समाचार अनुसारे काजा। व्याह करावन गणपति राजा।।
आयसु कीन तुरत महदेवा। लेहु साजि भल गणपति देवा।।
सुरन्ह सुमंगल अवसर जानिय। शंभु सराहि बोलु जय बानिय।।
आपु साजि बरसावहि सुमना। नाचि उठै इतना मन मगना।।
बाजन लाग पियारू बाजा। हेतु व्याह सज सकल समाजा।।
शिव ब्रह्मादिक बिबुंध बरूथा। चढ़े विमानहिं नाना जूथा।।
तन पुलकित मन ह्रदय उछाहू। चले करन्ह गजराज विवाहू।।
नन्दी आदि प्रमुख गण जितने। लगे बरात व्यवस्था अपने।।
विश्व रूप पुर सोहा वैसे। त्रयपुर शोभा कतहुं न ऐसे।।
एक ओर जहं सिद्धि भवानी। सुर अगुवा वर रूप निशानी।।
कीरति कान्ति प्रभा प्रभुताई। तेज ओज बनु आपु सहाई।।
तेहि शोभा नहि काहु नुरागा। निज निज लोक सबै लघु लागा।।
सुर पुर छटा अलौकिक नाना। परम विचित्र सुहाइ विताना।।

देव नारि नर रूप निधाना। देखि बराति धरम धन माना।।
देखि बराती सुर नर नारी। जानि सुभल भल नयन निहारी।।
जेस बरात तेस भाव विचारा। अवलोकिय पुर लाग पियारा।।
जेहि दरसे जग दोष दुराहीं। दोष आउ केस कोउ मन माहीं।।
पावइ मुक्ति पदारथ चारी। आपु अमंगल होवत छारी।।
सुर पुर देखु जात अखिलेश्वर। नाइ शीश करि नमन संगे वर।।
गणपति देखि मुदित पुर वासी। मानि मने सिद्धि बुद्धि प्रकाशी।।

नख शिख ते लखि गणपते, बारं बारं निहारि।
तन पुलके श्रद्धा उभरु, विश्वरूप कुल नारि।।137।।

कोटि भानु सम तेज अपारा। वक्र तुण्ड तेहि मध्य मझारा।।
महाकाय भव विघ्न विनाशी। वदन सुदृढ़ सुन्दर शुभ राशी।।
चितवनि मंगल मन मुद करनी। छबि आकर्षण जाइ न वरनी।।
सोहत साथ देव महदेवा। करहीं सुगण चांवरी सेवा।।
व्याह बिभूषन विविध बनाये। मंगल तन मंगल छबि छाये।।
सकल अलौकिक सुन्दरताई। कहि न जाइ जेहि उमा सजाई।।
गिरिजा कुंवर सबै मन भावा। दरसन परसन करि सुख पावा।।
जाहि यान गणपति असवारे। थकु वरनत जे ताहि निहारे।।
छबि दूल्हा अनुराग उभारत। दीखु सुरन्ह तिय आइ अगारत।।
पहिरे बरन बरन भल सारी। साज बाज तन अंग संवारी।।
अंग सुमंगल काम जगावत। तीछ नयन जेहि ओर चलावत।।
कर कंगन पायल पग बाजहिं। चाल विलोकि परम प्रिय लागहिं।।
शची शारदा देवि सयानी। तिनहीं चाल भाव तिय खानी।।

सजि बरात अदभुत अतुल, गै प्रजापति द्वार।
नारि सहित आरति करिय, गाइ मंगलाचार।।138।।
वेद विहित आचार स्वर, करिय सुरन्ह प्रयोग।
गणपति सादर लै चलिय, विरचिय सुरगण योग।।139।।
बैठारेउ भल आसनेउ, समधी संग बरात।
समय समय बर्षे सुमन, करि स्वागत सम नात।।140।।
फिरि फिरि पूंछहि आइ मिलि, सेवक रूप दिखाइ।
ब्रह्मादिक सुर वर सहित, रहे शंभु हरखाइ।।141।।

विश्व प्रजापति कृपानिकेता। मिलेउ परस्पर प्रीति समेता।।
बरसहिं सुमन समय अनुसारे। शान्ति पाठ ऋषि यूथ उचारे।।
नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपनि आन सुनइ न कोई।।
सकल भांति सम साजि समाजू। सोहत देव नगर सब आजू।।

सम समधी करि आदर बाती। पूजि प्रजापति सकल बराती।।
आसन उचित दीन्ह सब काहू। कहउं काह मुख सबै उछाहू।।
पाउ बराती सब सनमाना। दान मान विनती विधि नाना।।
रहा दान तब नाहि दहेजा। मांगन जांचन ते परहेजा।।
समय शक्ति गुण भव नुसारे। होहिं ब्याह सुर नर परिवारे।।
सिद्धि बुद्धि सम दान न आना। वर गणपति के शंभु समाना।।
प्रेम परस्पर रहत उथाहीं। भाव समर्पण दान कराहीं।।
सेवा भाव दान बहु ढंगेउ। दीन्ह प्रजापति मण्डप रंगेउ।।
समय उचित लखि सुर ऋषि आये। मण्डप वेदी दूल्ह बुलाये।।
आरति आसन सादर साथे। सोहे मणिमण्डप गण नाथे।।
करि कुल रीति सुमंगल गाई। देव वधू मुख बड़ मधुराई।।
ऋषियन बानि मानि सुर रानी। साजि संवारत कन्या आनी।।
सखी सहेलरि मिलि दुइ चारी। चलु कन्या संग आग पछारी।।
सिद्धि बुद्धि महिमा प्रभुताई। बरनि न जाइ मनोहर ताई।।
कन्या आवत देखि बराती। दृष्टि नुसार देखि करि बाती।।
लागति जेस गुण कोषागारा। रूप राशि पग चाल निगारा।।
मानि गणेश प्रथम सुर धामा। नत मन कीन्ह सबै प्रनामा।।
हरखे देव महेश पुरारी। गनि भल सेवी शैल कुमारी।।
मंगल गान कोलाहल भारी। भरहिं प्रमोद मगन सुर नारी।।
करि तेहि अवसर कुल व्यवहारा। दुइनव कुल गुरु वचन उचारा।।
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी।।
देव पितृ त्रय लै कुल नामा। घोष कराइअ मण्डप धामा।।

परिणय कर्मठ होन लग, वेदाचार स्वरूप।
वर कन्या लागेउ करन, दोउ आप अनुरूप।।142।।

वर कन्या आसन अनुसारे। सोहे मण्डप देव नुहारे।।
पुष्प माल दै दै एक दूजे। भाव भावना बन्धन पूजे।।
ऋषिन्ह उचारत मुख श्रुति बानी। मंगल गान कथत सुर रानी।।
वरन दान गोदान समेता। गुप्त दान कन्या सुख हेता।।
देव रूप महिमा बिसराई। सुता दान करि पाव पुजाई।।
पूजिय पांव प्रजापति रानी। धन्य धन्य अभिमंत्रित पानी।।
गुण सर्वज्ञ सुता वर दोऊ। महिमा माप ताहि न कोऊ।।
धन्य धन्य परिणय प्रभुताई। इहि व्रत बिनु नहि गृह सबलाई।।
रूप रंग सब बाह्य खजाना। तेज ओज गुण अन्तर धाना।।
संस्कार जितने जग माहीं। नाही सम परिणय फलिताहीं।।

परिणय संस्कार जेहि नाहीं। जन्म अकारथ ता जग मांही।।
गृहे धर्म अवसर प्रवेशन। पूजु देव पितु पांव हमेशन।।
कन्या पांव पूजि मन भावन। मन प्रजापति बड़ सुख आवन।।
गावहिं देव वधू अस गीता। जो उपराजु पांव ते प्रीता।।
नहि सम पावन कृते परिणय। बिनु परिणय न मिलत गृही जय।।
पीत हस्त करि रचु संयोगे। मात पिता कन्या वर योगे।।
हरद पुष्प लै दूब अक्षतन। गणना लोके परिणय बन्धन।।
माला ग्रंथिय लाजा हूमेउ। वचन प्रतिज्ञा भांवरि घूमेउ।।
सन्मुख सभा दोउ कुल सोहत। तौ परिणय बन्धन जग होवत।।
ताहि बिगारे जो हति दारा। मारु न जग तो ब्रह्म तेहि मारा।।

सिद्धि बुद्धि संग गणपते, भांवरि शोभा साज।
नयन लाभ लै करि जयति, सगरो देव समाज।।142।।

जाइ न बरनि तीनि कै जोरी। उपमा सकल कथे लगु थोरी।।
होइ जेतिक शुभ संग समेला। व्यापेउ गणपति ब्याहे बेला।।
वर कन्या शोभा प्रतिछांही। जग मगात मनि खम्भन मांही।।
मनहुं मदन रति धरि बहु रूपा। देखत ब्याह लोक बुधि भूपा।।
दर्स लालसा मन अभिलासा। सब उर छोह उछाह विकासा।।
परिणय गांठ बंधिय ऋषि हाथे। गांठि युगल लगु गणपति साथे।।
गणपति युगल प्रतिज्ञा भाखे। भै कुछ काज मिलिय इक राखे।।
एक ब्याह जग मण्डप होई। युगल ब्याह गणपति संजोई।।
प्रमुदित ऋषिन्ह भांवरी फेरी। वेद नीति जग रीति सगेरी।।
पारी पारी द्वौ तिय मांगन। सोहै सेन्दुर गणपति हाथन।।
तब करि देव ऋषिन्ह अनुशासन। वर वधु बैठन एकहि आसन।।
वर बल शक्ती पद अनुसारा। पाइ वधू सब पर अधिकारा।।
पूर भईं ब्याहे शुभ करनी। लोकाचार शास्त्र जेस वरनी।।
लोक पाल दिग्पाल समेता। दीखु ब्याह जे सुर गण नेता।।
विधि विष्णु शिवगण हरखाने। मुदित सबै नहि होइ बखाने।।
जे जो मांगु पाउ मन भावा। सबै मान शिव आप बढ़ावा।।
तब करि जोरि प्रजापति बानी। बोले वर बरात सनमानी।।
किहेउ सुपावन नगर हमारे। नाता जोड़िय भाग्य उभारे।।
होहीं भूल चूक बहु ढंगा। क्षमहु दोष बनि समता गंगा।।
कुल ऋषि वचन कही सब दीखा। देहु सबै वर वधू आशीशा।।
संस्कार जो गयउ बोवाये। देहु अशीश विकसि फल पाये।।
जल ब्रह्माण्ड ते करि अभिसिंचन। बरसाइअ वर पुष्प अक्षतन।।

दोउ कुल के लोग जे, अक्षत तिन्हइ थमाइ।
मंत्र उच्चरित करि ऋषिन्ह, वर अशीष बरसाइ।।144।।
शुभाशीष शुभकामना, रह संग जाके जौन।
तौन परसि कह बनु सफल, रहा न कोऊ मौन।।145।।
अभिसिंचन लागे करन, ऋषि गण मंत्र उचारि।
नभ ते लागे सुर करन, पुष्पन कै बौछारि।।146।।

गणपतिः गिरिजा वृषभध्वजः,
षण्मुखो नन्दीमुख डिमडिमा।
मनुज–माल–त्रिशूल–मृगत्वचः,
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।।
रवि शशी–कुज इन्द्र–जगत्पतिः,
भृगुज–भानुज–सिन्धुज–केतवः।
उडुगणा–तिथि–योग च राशयः,
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।।
वरुण–इन्द्र–कुबेर–हुताशनाः,
यम–समीरण–वारण–कुंजराः।
सुरगणाः सुराश्च महीधराः,
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।।
सुरसरी–रविनन्दिनि–गोमती,
सरयुतामपि सागर–घर्घरा।
कनकयामयि–गण्डकि–नर्मदा,
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।।
हरिपुरी–मथुरा च त्रिवेणिका,
बदरि–विष्णु–बटेश्वर–कौशला।
मय–गयामपि–दर्दर–द्वारिका,
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।।
भृगुमुनिश्च पुलस्ति च अंगिरा,
कपिलवस्त–अगस्त्य च नारदः।
गुरुवसिष्ठं–सनातन–जैमिनी,
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः, सामवेदोह्यथवर्णः।
रक्षन्तु चतुरो वेदा, यावच्चन्द्रदिवाकरौ।।

करि अभिसिंचित मंत्र जल, ऋषिगण बारं बार।
पीत पुष्प पट सोह भल, अदभुत देह सिंगार।।146।।

मौर मनोहर सोह शिर, मंगल मणि ज्योताइ।
भाल तिलक सिन्दुर छबि, नई चेतना लाइ।।148।।

जल जमुना गंगा दिन राती। रहु वर वधू तबलुं अहिबाती।।
सिद्धि बुद्धि गणपति तेहि ठौरे। जेस वर पाउ पाउ न औरे।।
पूजन प्रथम जगत शुभ काजे। लह गणपति वर ताहि समाजे।।
पुनि वर वधू करिय सबु नमना। जोरिय गांठ मुदित मन मगना।।
सोह सुन्दरिन मण्डप मांही। समय नुसारे मंगल गांही।।
मण्डप ब्याह जाहि पुरनाई। नारिन्ह कोहवर चली लिवाई।।
मंजुल अंग मनोहर जोरी। मन्द चाल चलि कोहवर ओरी।।
हास विलास भांति रनिवासा। कामिनि करहि मधुर उपहासा।।
सरहजि सालि धाइ चलि आके। करिय व्यवस्था कोहबर जाके।।
दीन्ह वधू वर आसन एकू। लगी निहारत दूल्ह विवेकू।।
अवसर मंगल गावहिं नारी। चतुरि सयानि सुनाइ सुगारी।।
घर कोहवर ससुरारि देव घर। बाती मिलब तहं बड़ हित वर।।
तिते श्वसुर कुल सुर वर हेता। हित संजोइ रखु आपु निकेता।।
तहां मुदित मन देव गजानन। आपु विवेक प्रगट करि आनन।।
पानि जोरि कुल देव मनाइअ। बाति मिलाइअ विनय सुनाइअ।।
शीश नवाइअ सबै हंसाइअ। मानि देव निज परिचय गाइअ।।
हम तुम्हार तुम भयो हमारे। जब तब आइब द्वार तुम्हारे।।
बनेव सहायक रक्षण कारी। जेस अबलौं सिर जेउ निज नारी।।
लै संग ताहि वचन बद्ध होवत। आरति सहित सुबाति मिलोवत।।
सुनि गृह देव वचन गणपति के। परसेउ वर धन सम सुरपति के।।
गावत गीत उभारत प्रीता। नारि सुन्दरिन निज कुल रीता।।
अनुसारे गहि तिन शुण्डाई। करै तिलक मुख माथ पोताई।।
हास विलास विनोद बढ़ाई। गांठि खुली कोहबरे बिदाई।।

संग बराती पुनि मिलेव, करत नमन सतकार।
सादर प्रजापति कहेउ, अब अवसर जेवनार।।149।।

करिय बुलाव बराती सगरे। विश्व प्रजापति विनवत अखरे।।
पाइ सबै तिन पांव पखारे। यथा योग आसन बैठारे।।
वर पितु सहित पखारत चरना। सो आनन्द जाइ नहि वरना।।
पग धोवत मन नाहि अघाहीं। जेस सब सुख बैठे घर माहीं।।
सादर आसन उचित बिठाई। रही व्यवस्था सबै सुहाई।।
बढ़वत गारि गान अनुरागा। भये पारस सब जेवन लागा।।
भांति अनेक पके पकवाना। सुधा स्वाद नहि जाइ बखाना।।

एक ते एक स्वाद सुखदाई। विश्वकर्मा कीन्ही पकवाई।।
व्यंजन विविध नाम अनकूता। खांवइ देव गनहिं अदभूता।।
जेवत सुनहिं बरातिन गारी। नाम समेत पुरुष अरु नारी।।
समय सुहावनि गारि पियारी। पाउ बरातिय बारी बारी।।
एहि विधि सबही भोजन कीन्हा। आदर सहित आचमनु लीन्हा।।

खान पान सन्मान विधि, प्रजापति पुरवाइ।
गये बरात जनवास पुनि, सब सुख संग सुहाइ।।150।।

नित नूतनमंगल पुर मांही। गयो विराजि नगर सबु ठाहीं।।
ब्रह्म वेला सुर गण सब जागे। निज नित क्रिया निपटन लागे।।
पूजन पाठ गृही अनुसारे। जेस जे ते तेहि ढंग संभारे।।
वर समेत बालक गण जेते। पद प्रनाम करि कृपानिकेते।।
तुम्हरिन कृपा भयउ सब काजू। विजय हमारि सफल भै आजू।।
ऋषि मुनि देव समूह बराती। शिव पद नमन करिय सबु भांती।।
अवसर बूझि प्रजापति आये। करत नमन पद शीश नवाये।।
देवाचार नगर अनुसारे। खान पान करि विविध प्रकारे।।
जय जय करत लोक पति नाथा। करहिं प्रशंसा दइ सब माथा।।
निपटे खान पान नव प्राते। होन बिदा करि शंकर बाते।।
शील सनेह उछाह उभारत। बोलु प्रजापति वाणी आरत।।
आयसु जौन निबाहत सोई। वचन तुम्हार पूजु सब कोई।।
लागे तुरत होन सब काजू। बिदा बराती दुलहिन साजू।।
सबै बराती सहित घराती। होवन विदा चलाइअ बाती।।
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी। चिदानन्द निरगुन गुणरासी।।
मन समेत जेहि जान न बानी। नेति नेति कहि वेद बखानी।।
आदि अन्त सब रूप सनातन। सब तजि बंधा गृही पद नातन।।

लेन बिदाई वर बरात कै, दूल्हन संग समेत।
आपु यान चढ़ि शिव चले, प्रजापते निकेत।।151।।

विश्वरूप कुल द्वार सुहाये। बनिय बराती जे संग आये।।
नगर नारि नर देखन आवत। करन्ह बिदा प्रभुता गुन गावत।।
जहं तहं केउ केउ अस बतियाहीं। अबहिं बिदाई लै सब जाहीं।।
लेहु नयन भरि इन्हहिं निहारी। जेहि दरसे तरु पातक भारी।।
भाग्य परम बसु नगर हमारे। कठिन तपे दरसन दुशवारे।।
इहि विधि सोचि नगर पुर लोगा। निरनिमेष करि दृष्टि प्रयोगा।।
पूजि गजानन पद बड़ नेहा। पुलकन लाइ फिरहिं निज गेहा।।
ज्योति गजानन छबि प्रिय लागी। होत न मने जाउं इन्ह त्यागी।।

रही न लाज प्रीति उभरानी। फिरि फिरि मिलि चाहत बतियानी।।
वर सन्मान सासु बड़ कीन्हा। देति विदाई अवसर चीन्हा।।
सिद्धि बुद्धि कै जीवन साथी। रक्षक मानि पूजि मुख हाथी।।
सिबिका उड़न अनूपम आई। हेतु सिद्धि बुद्धि गमन बिदाई।।
पुनि पुनि मातु गोद भरि लेहीं। दइ आशीष सिखावन देहीं।।
होवहु तनया स्वामि पियारी। अमर सुहाग अशीष हमारी।।
पति रुख लखि आयसु अनुसारे। सास ससुर करु सेवा कारे।।
बड़ सनेह दइ सखी सयानी। सिखवहिं नारि धरम मृदुबानी।।
कुल परिवार सबै समुझावत। बार बार माता उर लावत।।
नारि धर्म कुल रीति बतावा। आपु प्रजापति बहु समुझावा।।
नयन भरे जल दीन्ह अशीषा। जाहु सुता बनु गृही बरीशा।।
सिद्धि बुद्धि जब पांव निकारी। उभरे नगर नयन जल बारी।।
व्यथा विलोकि धीरता भागी। सखी सनेह जे बड़ अनुरागी।।
विश्व प्रजापति कह तुम त्राता। भेंटत विदा काल जामाता।।
करउं कवन विधि विनय तुम्हारी। सीख अशीष हम कइस उचारी।।
तुम समर्थ जानत गृह धरमा। करत पार लखि वसुधा करमा।।
मम तनया तुम तने पियारी। संरक्षक सम पितु महतारी।।
सौंपत मात पिता पद नाते। बनि रहु ता हित भानु प्रभाते।।

बहु विधि करि गणपति विनय, देत बरात बिदाइ।
विश्व प्रजापति भाव प्रिय, लै शिव ओर नेराइ।।152।।

रह समधी पर गनि अखिलेश्वर। भै नत मस्तक प्रजा पतेश्वर।।
बार बार चरनन सिर नावा। जग रक्षक ते आप सुनावा।।
बनी न जो कुछ कुल परिवारे। दोष दूरि करि रहा संभारे।।
करउं नाथ केहि भांति सिखावन। तुम तजि सब करु गृही निभावन।।
काज सरेख न इहि ते आना। तुम सरेख सब विधि सब माना।।
गोद तुम्हारे जग सुख पावत। तुम जानत जग तुम्ह लग धावत।।
तनया दीन्ह तनय सेवकाई। सो भल जौ तुम रक्षणताई।।
बाजत बाजन समय नुसारे। रथ गज साजि बरात निहारे।।
चरन सरोज धूरि धरि शीशा। लीन दीन विश्वपति आशीशा।।
बार बार करि विनय बड़ाई। कीन्ह प्रजापति सुता विदाई।।
वर बरात पुर लोग निहारत। प्रेम सजल मन नैन उभारत।।
वन्दि ग्राम सुर चले गजानन। सगुन मिलन्ह लागे पथ आनन।।

एक दूज वन्दत नमत, फिरु बरात निज धाम।
सिद्धि बुद्धि वर साथ लै, शोभित बांये दाम।।153।।

सुरन्ह सहित कैलासपति, धरु पथ काशी ओर।
बरसन लागे पुष्प नभ, गवा गूंजि जय शोर।।154।।
इत शिव पुर मंगल कलश, घर घर सोह सजाय।
आवन समय बरात कै, गवा चार पसराय।।155।।

सुनिय नगर जन फिरिय बराता। दुलहिन साथ सबै कुशलाता।।
निज निज सुन्दर सदन संवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे।।
गली गली अरगजा लगाई। चौक जहां तहं चौक पुराई।।
तोरन केतु पताक निशाना। उड़हि बजारे सबै मकाना।।
सफल पूगफल कदलि रसाला। लता मालती रोपु तमाला।।
लगे सुभग तरु परसत धरनी। मनिमय साज बाज अनबरनी।।
तेहि अवसर अस शिव घर सोहा। रचना देखि सबै मन मोहा।।
मंगल सगुन मनोहर ताई। सकल सम्पदा तहां सुहाई।।
सिद्धि बुद्धि कै आउब जानी। चली सिद्धियां सब अगुवानी।।
जन उछाह मय नगर दिखाये। आपु साजि शंकर गृह आये।।
इहि लालसा सबै मन सिरजा। भल विधि दिखब पतोहू गिरिजा।।
जूथ जूथ मिलि चली सुहागिन। लिये बालिका वृद्धा आगिन।।
सकल सुमंगल भाव आरती। होइ सुशोभित भांति भारती।।
सोहा गिरिजा भवन कोलाहल। होत जयति स्वर शंभु हलाहल।।
जाइ न बरनि भीड़ अधिकाई। दिखन बहू वर ब्याह फिराई।।
नेर निकट दासी घर जेते। परम मुदित सब उमा समेते।।
देखन वधू प्रवेश सुहावन। बाढ़इ पल पल लग मनभावन।।
नाहिय श्रम थकान सुधि गाता। फिरहिं उछाहिल वृद्धा माता।।
नारी ऋषिन्ह देवियां गंगा। आउ तहां कइ निज गति भंगा।।
मोद प्रमोद विवश पुर नारी। करि उपहास करै किलकारी।।
दिखन्ह वधू वर बड़ अनुरागा। शिव घर आवत सब चलि भागा।।
बाजत विविध विधाने बाजे। मंगल मुदित मनोहर साजे।।
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मंगल मूला।।
अक्षत अंकुर लोचन लाजा। मंजुल मंजरि तुलसि विराजा।।
सोह मनीमय वन्दन वारे। मनहुं विधाता आप संवारे।।
पूरित चौका द्वारेउ द्वारे। रंग विरंगे विविध प्रकारे।।
रांचि आरती विविध विधाने। मंगल गान प्रविशु सब काने।।
सोहे देव पितर तहं आई। बूझि वधू नव भवन अवाई।।

कनक थार आरति धरे, शोभित मंगल गान।
साजि व्यवस्था परिछने, गिरिजा मुद उफलान।।156।।

होहिं सगुन बरसइ सुमन, सुर दुन्दुभी बजाइ।
बिबुध वधू नाचै मुदित, मंगल गान सुनाइ।।157।।

सुमिरि शंभु गिरिजा गणराजा। मुदित नगर जन सकल समाजा।।
यश गावहिं त्रय लोक उजागर। ऋषि मुनि देव भगत नट नागर।।
जय ध्वनि विमल वेद वर बानी। दस दिशि रहा सुमंगल सानी।।
नभ सुर लोग नगर अनुरागा। लगत विलोके सबै सुभागा।।
साज बराती बरनि न जाई। पहुंचे नगर प्रीति मनसाई।।
वर दूल्हन पुर आइ विराजे। जहं हित आरति ठाढ़ समाजे।।
मन पुलकित बनु द्रव्य लुटावन। करि उछाह मन आगे आवन।।
आरति करन लगी मुद गिरिजा। मानहु तेज कोटि रवि उपजा।।
बरसहिं सुमन मुदित पुर लोगा। कह अस दुर्लभ समय सुयोगा।।
नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा। पुरवासी जेतिक नभ देवा।।
होहिं निछावर अगणित भांती। भूषन मनि पट नाना जाती।।
करहिं आरती बारम बारा। मोद प्रमोद नगर पुर दारा।।
सिविका सुभग ओहार उघारी। गिरिजा दुलहिन स्वयं उतारी।।
बूझि मनोहर गणपति जोरी। पाउ परम सुख नारि सबोरी।।
बूझि बुद्धि संग जगती जननी। दर्शक भाग्य जाइ नहि बरनी।।

वेद नीति कुल रीति संग, करि आरति जगदम्ब।
सम बेटी गहि कर वधू, प्रविशी गृह अबिलम्ब।।158।

दइ आसन वर वधू बिठावा। परम मुदित आशीश सुनावा।।
सुनि शिव आयसु ऋषि गण आये। कर्म भूमि गृह गांठ जोराये।।
पूजन देव गृही अनुहारा। होन यज्ञ हर गृह अनिवारा।।
इहि ते पूजन गृही धाम के। रह विधि कोऊ सकल धाम के।।
देवी रूप वधू अनि आई। गृह धर्मे सुर प्रथम पुजाई।।
रखि गणपति अर्धांगिन संगा। करि गृह पूजन साखी गंगा।।
पाउ न शुभ कारज सफलाई। जब लौं न गृह देव मनाई।।
करि वर वधू उपासन देवा। पूजि मात पितु औरन सेवा।।
आशिष लै लै विविध प्रकारा। वधू आप गृह वास पधारा।।
भये सपूरन मंगल काजू। रहेउ मुदित पुर देव समाजू।।
नेगी नेग योग सब लेहीं। रुचि अनुरूप महेश्वर देहीं।।
खान पान करि विदा बराती। परमानन्द हरख सब भांती।।
गिरिजा गणपति देव महेशू। सब ते मिलु नाही कोउ शेषू।।
कहउं काह विधि बहू देखाई। रखु गिरिजा आदर समताई।।
गिरिजापति आयसु अनुसारे। लाग चलन्ह गृह कारज सारे।।

गणपति ब्याह शंभु परिवारा। जाइ जहां तहं सुजश उचारा।।
शिव परिवारिक कथा कहानी। उपमा रूप मिलत जग बानी।।
पावन रूप नवल युग धारन। करि गिरिजा पति विधि निरमारन।।
गणपति ब्याह भयो जेहि दिन ते। युग परिवर्तन चलु तेहि छिन ते।।
विश्व विजय जेस गणपति पाई। तानुसार बनु प्रिया सगाई।।
गृही काज मानव अनुसारे। होन लाग चहुं पुर विस्तारे।।
आप गृही गति गिरिजा शंकर। पाइ बहू बल करि बड़ सुन्दर।।
जीवन जन्म सफल भल माना। भावी आतम बोध नुमाना।।
सोहा उज्ज्वल भविष्य मनोहर। जो सुखदायक शोक सबोहर।।
गिरिजा सादर बहू निहारी। जानहिं तिन्हइ सुता अनुहारी।।

गृह कारज बहुएं करहिं, आपन दायित्व मानि।
बनि प्रिया कुल प्रिय बनिय, गृही साधना तानि।।159।।

रहा न जीवन आपु सुधारन। तलक परोसी निज अनुहारन।।
भल विधि जौन तौन चितलाई। आप करै चलि आन बताई।।
सासु ससुर पति रुख अनुसारे। करि सेवकाई समय गुजारे।।
देखि शिवा शिव कुल परिवारा। सब सोचहिं अस बनै हमारा।।
रोग दोष दुःख सपनेउ नाही। फूट कलह विष नाहिं सुनाहीं।।
कुमति कुभाव शब्द नही सूने। गृही यज्ञ सन्ध्या दोउ जूने।।
प्रात पुनीत काल जागरना। रहा निरन्तर शंकर भवना।।
जाइ अमंगल मंगल होई। सासु बहू कै गै सजि गोई।।
परमानन्दित छाति जुड़ानी। गणपति जोड़ ते सासू रानी।।
षटमुख सुधि जब तब दुख डाये। करइ सोच वापस केस आये।।
जेहि घर सुमति सकल सफलाई। देत विधाता आप पठाई।।
जे भल विधि गृह धर्म निभावा। पूरन सकल मनोरथ पावा।।
काह न सच बनु सोच भवानी। जाहि तीन पुर जननी मानी।।

मंगल मोद उछाह नित, गिरिजा गृहे सुहात।
शास्त्र नुसारे धर्म गृह, साधि जात दिन रात।।160।।
युग परिवर्तन जो करत, करि युग बदलन बात।
परिवर्तन प्रति पल तहं, मिलत होत प्रभात।।161।।
बीति गये कछु काल जब, बनु परिवर्तन एक।
एक एक सुत बनु जननि, गिरिजा बहू प्रत्येक।।162।।

सिद्धि कोख ते जन्मा लाला। क्षेम नाम राखा जगपाला।।
बुद्धि उदर जन्मेउ सुत जोऊ। भाखे लाभ नाम सब कोऊ।।
जहं गिरिजा तहं गणपति पूता। संग गजानन सिद्धि प्रभूता।।

सिद्धि बुद्धि शुभ लाभ समेते। कौन कमी मिलु ताहि निकेते।।
जहां धर्म गृह सुमति सुचारा। स्वर्ग तहां विधि विष्णु उचारा।।
धर्म धरोहर भूजल थापिय। गिरिजा शंकर गृहबल जापिय।।
सुमति गठन जहं प्रति सहकारा। स्वर्ग धरा पर जाइ उतारा।।
करनी संस्कार गृह जैसे। गिरिजापति कीन्हीं सब वैसे।।
गर्भे अवसर स्तन पाने। तलक जौन जेहि भांति विधाने।।
भल विधि साधिय शिव परिवारा। गणपति आपु सहित लै दारा।।
अवसर यज्ञपवीत न आवा। तब गिरिजापति यज्ञ रचावा।।
लोक लोग कुल रीति नुसारे। ऋषिन्ह पड़ोसी चाह उचारे।।
गये दिन ढेर न भै यज्ञ काजा। नाथ सुनहु अस चहत समाजा।।
महायज्ञ अस करउ रचावन। जामें बनइ सकल सुर आवन।।
ऋषियन्ह नीति शिवा शिव भायी। करन्ह यज्ञ मनसा उपजायी।।
निश्चित करिय शुभद तिथि वारा। भै शिव यज्ञ बात विस्तारा।।

गिरिजापति कुल संग लै, आपस कीन्ह विचार।
महायज्ञ कै भार बड़, दिवस चले दुइ चार।।163।।
भले व्यवस्था जाइ निभि, सहयोगी संसार।
पर षटमुख आवै भवन, मोहि लागत अनिवार।।164।।
कुल समेत शंकर चलेउ, षटमुख करन बुलाउ।
पहुचि विनय वाणी कथिय, बहु विधि कीन मनाउ।।165।।
कह गिरिजापति बिनु तुमहि, होइ यज्ञ नहि पूर।
इहि अवसर इहि ते चलब, तुमको भयउ जरूर।।166।।
यज्ञ काज पितु मातु वच, जौ करु अस्वीकार।
षटमुख मन सन्देह भै, बनु तप भंग हमार।।167।।

मानिय मात पिता वचनाई। पुनि करि षटमुख गृहे अवाई।।
शंकर भवन सुमंगल होहू। सोह शिवा शिव पूत पतोहू।।
मंगल भवन अमंगल हारी। कारज जाइ रोज निरमारी।।
संस्कार बड़ यज्ञ पवीता। रांचिय यज्ञ सहित जग हीता।।
देश देश ऋषि देव बुलावा। करन महेश तुरत शुरुवावा।।
आपु जाइ कहुं गणन्ह पठाई। दूरि व्यवस्था विशिख बनाई।।
पत्र निमत्रंण करिय तयारा। लरिकन भार अंटावन डारा।।
दै सावधि प्रथम फिरु जोई। कथिय महेश बली गनु सोई।।
देबइ पुरस्कार अमराई। दोऊ देहु निमंत्रण जाई।।
षटमुख मने उपजु पिछ बाता। फंसे शरत लागिय आघाता।।
पर पितु मात बात नहि टारी। कहे सुने करि दीन्ह तयारी।।

देन निमंत्रण तीन लोक सुर। गज मुख षटमुख छोड़ दीन पुर।।
वाहन दोऊ आपु दौराये। पत्र निमंत्रण चलि पहुंचाये।।
सावधि काज षडानन कीन्ही। पितु पद पूजि प्रथम पद लीन्ही।।
हार जीत कै रचिय खेलारी। षटमुख जीतेउ गजमुख हारी।।
समय बिताइ थकावट साथे। दै न्यौता लौटेउ गज नाथे।।
आपु शंभु जग जानन वारे। मूल प्रकृति रूप संसारे।।
सृष्टि प्रकृति नारि नर रूपा। आपु रांचि रचु सृष्टि स्वरूपा।।
अधनारीश्वर रूप महेश्वर। जीत हार दुइनों सर्वेश्वर।।
षटमुख जीत परम सुख उपजा। मनहुं महेश्वर अन्तर गिरिजा।।

पूत षडानन गनि बली, करि मोदक अनुदान।
कहेउ सुधा रस सोह इहि, गुण अमरत्व प्रधान।।168।।

मां पितु वर मोदक अमराई। पाइ षडानन बहु मुदिताई।।
पिता समेत मगन महतारी। षटमुख पाछिल व्यथा बिसारी।।
उत गणपति मन रहा न माखा। हार आश पहलेन से राखा।।
नाही मगनता कै कमताई। सब परिवार सुखी इक नांई।।
वेद नीति कुल रीति नुसारा। काज यज्ञीय गवा अरुवारा।।
ऋषि मुनि देव सकल गृह आये। देव यज्ञ ब्रह्म तेज सुहाये।।
लरिकन यज्ञपवीत पिन्हाई। जन जीवन महिमा ऋषिगाई।।
ब्रह्म सूत भव कवच समाना। परसु ब्रह्म बल मंत्र विधाना।।
देश भूमि संस्कृति अनुसारे। ब्रह्म तेज ब्रह्म सूत पसारे।।
निवसहिं देव रूप तन थाने। तन मानव ब्रह्माण्ड समाने।।
जेस गौ तन सबु देव निवसहीं। तानुसार सुर जन तन बसहीं।।
पाइअ ब्रह्म सूत परकाशा। शोधि वदन पुरवहिं मन आशा।।
प्रियता चाम प्राण प्रमाना। ब्रह्म शकति बिनु सम पाषाना।।
पेट पाताल शीश स्वर्गाई। वक्ष धरा सम ब्रह्म बनाई।।
लोहू विष्णु कमर विधाता। शिव अनुरूप माथ मन गाता।।
सकल इन्द्रियां देव समाना। सदमति रूप भगवती माना।।
जीव विष्णु मन ब्रह्मा भांती। देह आत्मा गनु शिव पाती।।
गगन तत्व प्रद शीश सभी का। पवन देवता नाक नभी का।।
रवि शशि नयन ज्योति अनुहारे। ब्रह्म समाहीं काने द्वारे।।
मुख निर्माता तन मन प्राना। औषधि अन्न नीर छबि नाना।।
तन बाहू गनु इन्द्र स्वरूपा। पांव भाग जग धुरि अनुरूपा।।
जौ भल देह निरोग अरोगा। संभव तब सुख सम्पत्ति भोगा।।
इहि ते सम्पत्ति नाहि प्रधाना। देह देव पर राखहु ध्याना।।

मात पिता जेस बाल रखावत। तेस विधना विधि देह बनावत।।
जाहि ताहि विश्वास भरोसा। व्यसने रोषे जे तन पोषा।।
होइ दीन ता तन प्रभुताई। सुर मुनि मनुज रखै अरिताई।।
देव रूप जग इन्द्रिह कामा। देहिं साथ जीवन अविरामा।।
सत्य सुनीति जे निज उर बोई। ता भव भटकन इन्द्रिह खोई।।
इतेउ जो निन्दा प्रद अपनाना। चलहुं ताहि तजि शास्त्र बखाना।।
जौन ठीक भल जीवन हेता। तेहि पालउ परिवार समेता।।
जौन अभल तेहि चलउ दुराई। तिते बैर रखु बैरी नांई।।
देखे मोह सुने बनु ज्ञाना। ह्रदय धरे मिलु ब्रह्म खजाना।।
देह असुरता मति अज्ञाने। जाइ व्यापि पथ शास्त्र भुलाने।।
भाव जथा तथ फलत उपासन। कर्म नुसार प्रगति गनु आपन।।
नीति जथा तथ जीवन बातन। मुख तन सूचक सुनदरतापन।।
विप्र धेनु सुर मनुज शरीरा। पूजनीय नाशक भव पीरा।।
इते चलत जे इन अनुकूला। लहत न तत्पर कछु भव शूला।।
विप्र रूप गनु देव समाना। देव रूप मस्तक जग माना।।
पूजि धेनु पद लह सुरताई। अन्तर बाहर पावन ताई।।
सुर पूजिय बनु जगत सुखारी। दैहिक इन्द्रिह सुर अनुहारी।।
मनुज देह महिमा प्रभुताई। तन केतनव अवतार कहाई।।

मानव सुरता विविध विधि, कथिय यज्ञ प्रभुताइ।
बार बार तहं देव ऋषि, राजित सभा सुनाइ।।169।।
अदभुत महिमा यज्ञ थल, शोभित शिव परिवार।
शोभा उपमा नाहि कछु, मन मुद सबै निहार।।170।।
सुरन्ह मनौती तहं करिय, षटमुख ब्याहन हेत।
यज्ञ देव प्रभुताइ बल, लीन्ह षडानन चेत।।171।।

देव मनावन मां पितु कथने। सुनि जीवन गृह महिमा वचने।।
ब्याह वचन षटमुख स्वीकारा। सुनिय सभा सुर करि जयकारा।।
मूल प्रकृति अशं षठताई। सुता विधाता षष्ठि कहाई।।
शक्ति बालदा विष्णु माया। महिमा अदभुत देव जिताया।।
शिशु सुखदा पूरक अभिलाषा। मनोहारिणी प्रीति प्रकाशा।।
इते देव सेना परु नामा। षटमुख योग रही वसुधामा।।
भा षष्ठी षटमुखे विवाहा। मनसा पूर शिवा शिव चाहा।।
षटमुख षष्ठी कै इकताई। अब लौं पूजि लोक सुखपाई।।
काशी जयति गूंज भै भारी। यज्ञ मनोरथ पूरण कारी।।
सिद्धि बुद्धि संग जयति गजानन। संग गिरि तनया जै पंचानन।।

हरखि देव ऋषि यज्ञ करावा। गृही सफल शंकर फल पावा।।
बनु जग उपमा शिव परिवारा। काशी गृही योग गुरु द्वारा।।
यज्ञ कराइ देव ऋषि सगरे। नीति सुनाइअ शंकर अखरे।।
जेहि विधि बनु कुल प्रज्ञावाना। नीति गठन कुल होन सयाना।।
पाइ यज्ञ गृहि होत संजीवन। शोधक संस्कार जन जीवन।।
रूप चेतना ब्रह्म स्वरूपा। होत ब्रह्म जग बीज नुरूपा।।
नाना रूप बीज आकारा। करु सोई निर्मित संसारा।।
बीज मांहि बसु सृष्टी प्राना। विश्व प्रेम ते पोषण धाना।।
गिरिजापति काशी गृह बासी। मनुज रूप मर्यादा राशी।।
जेहि विधि होइ मनुज हित हेता। आपु करहिं सो कृपा निकेता।।
गृह नगरी काशी प्रभुताई। नाना विधि ऋषि देव सुनाई।।
काशी धाम शंभु परिवारा। सोह जहां महिमा अनपारा।।
गंगा परिसर ऋषि मुनि धामा। देव उतरि नित करहिं प्रनामा।।

काशि विराजत शंभु कुल, गृह मरजाद उभार।
ता पुर महिमा जग पसरु, शुभद सुखद संसार।।172।।

तारक महामंत्र परतापा। जेहि धरनी शिव मुखे वियापा।।
गंगा वरुणा असी समेला। काशी धरनि करहि नित खेला।।
अनसूयादि अत्रि ऋषि नगरी। सोहत कुल समेत शिव बखरी।।
विश्वनाथ बनि विश्व विधाता। करहिं निवास रूप पितु माता।।
तेहि गिरिजा आपन गृह मानी। गृह महिमा उपराइ बखानी।।
साधिय तीन उपासन साथे। दै दै यज्ञ आहुति निज हाथे।।
रांचन युग विधि मनुज थमावा। स्वर्गानन्द विधान बतावा।।
बसहिं जहां शिव तहं दिनराती। होवइ फलित भांति शिवराती।।
काशी नगर अगन शिवराती। व्रत प्रभाव पुषित सब जाती।।
धाम धरा धन धरम धरोहर। जित काशी सब शंभु मनोहर।।
इहि ते काशि मरण जग माना। आपु करहिं शिव मुक्ति प्रदाना।।
जीव सो देवयान पथ गमने। देहिं प्रबास शंभु पुर अपने।।
आपु यज्ञ रचि शंभु भवानी। सबै करन्ह करि आयसु बानी।।
यज्ञाचार विहार विचारा। व्यापि रहा काशी पुर द्वारा।।
योगी यती गृही ऋषि साधू। सब गृह यज्ञ होइ बिन बाधू।।

राज गृही सब नीति दै, शिव प्रजा परिवार।
पालहिं देव स्वभाव ते, काज भूप अनुहार।।173।।

जन जीवन तन कुमति कुभाऊ। छीनेउ दै विधि कलिक प्रभाऊ।।
काल कुकाल ढोंग कलिकाला। रहा नाहि नगरी महकाला।।

शिव परिवार ताहि संहारा। जग जो देइ मनुज अनचारा।।
जेस कुल गठन करिय त्रिपुरारी। दै सो सीख लोक नर नारी।।
पालिय पोषिय आप नुसारे। बुझि महिमा जग विनय उचारे।।
नमः शिवाय नमः शिवाय। हर हर गंगा महेश्वराय।।
नमः शिवायै नमः शिवाय। जय गौरी पति गिरिजा राय।।
भूर्भुवः स्वः शक्ति प्रदाय। जय महामंत्र महिमा उद्‌गाय।।
गृही साधना सकुल सुहाय। सुर परिवार दूज अस नाय।।
जग जन जीवन कला दिखाय। भाल चन्द्र छबि जटा धराय।।
काल नही बनि महाकालाय। बम बम भोले दिगम्बराय।।
षटमुख गज मुख पिता कहाय। जय काशी पति नमः शिवाय।।
पंचननाय विश्वेश्वर राय। युग प्रवर्तक चक्र चलाय।।
पुरुष सनातन नेत्र त्रयाय। नमः शिवायै नमः शिवाय।।
संस्कार गृह महिमा लाय। जग दुख दोष दरिद दहनाय।।
जय नमः शिवायैः नमः शिवाय। ज्योति जगत जय महा देवाय।।

गृही यज्ञ गिरिजा सदन, सुरन्ह करिय सम्पन्न।
भयो विदा सब नाइ शिर, पुर जन जन प्रसन्न।।174।।
बूझि पूर गृह काज हर, करि कैलास पयान।
भयो नगर जन बड़ दुखिय, शोकित मरण समान।।175।।
पुरवासिन सर्वस व्यथा, नाशिय गिरिजा राय।
कह जे पालिय धर्म गृह, तहां बसब हम आय।।176।।
दुख दारिद तहं आउ नहि, राखउ दृढ़ विश्वास।
कुल समेत लह स्वर्ग सुख, पूर मनोरथ आश।।177।।
गृही तपोवन मोर कथ, जे पढ़ु सुनु दै ध्यान।
भव भय बन्धन काटि सो, सहजे बनै महान।।178।।
संस्कार संयम नियम, ध्यान साधना योग।
युगे मुखे वर पाउ पुर, इत नाशइ भव रोग।।179।।
गिरिजापति परिवार लै, आपु चले हिम ओर।
पाइ गृही वर पुर मुदित, पद नमनत कर जोर।।180।।

इति श्री मद् शिव शक्ति कथायां
सकल कलिकलुषविध्वंसने चतुर्थ अध्यायः
;कुमार खण्डः समाप्तःद्ध